TC/RAJ/RAJ/00095

अपरंच

राजस्थानी भासा अर साहित्य री तिमाही

जुलाई-सितंबर 2015

सलाहकार मंडल

मोहन आलोक, गंगानगर

नंद भारद्वाज, जयपुर

डॉ. आईदान सिंह भाटी, जैसलमेर

ओम पुरोहित 'कागद', हनुमानगढ़

डॉ. नीरज दइया, बीकानेर

संस्थापक संपादक

स्व. पारस अरोड़ा

संपादक

गौतम अरोड़ा

संपादन सैयोग

शंकरसिंह राजपुरोहित, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, महाजन

प्रह्लाद राय पारीक, पीलीबंगा

गौरीशंकर कुलचंद्र, हनुमानगढ़

ओम नागर, कोटा

मुखौळ : **डॉ. संज्ञा उपाध्याय** दिल्ली

टाइप सैटिंग : **भंडारी ऑफसेट** जोधपुर

अंतरजाळ अंक संचालक : **डॉ. नीरज दइया** बीकानेर

साज सज्जा : **रमेश व्यास** जोधपुर

सगळा पद अवैतनिक

सदस्यता

अेक अंक रौ मोल : 30 रिपिया

अेक बरस रौ मोल : 100 रिपिया

तीन बरस रौ मोल : 250 रिपिया

आजीवन : 1100 रिपिया

प्रकासक

अपरंच प्रकासण

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)

दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800

e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

web : www.apranch.wordpress.com

विगत

❑संपादक री बात

लेखक नै लेखक रै साथै होवणौ चाईजै — *गौतम अरोड़ा* — 3

❑पंचामरत

सतजुग, अरज — *रामेश्वर दयाल श्रीमाली* — 5

फरक थारै अर म्हारै बिचाळै,
हाऊड़ौ— हाऊड़ा ई हाऊड़ा, देवता — *वासु आचार्य* — 10

थारै हुवण री, आस्था, स्याणा लोगां सुणौ,
अेक दीवौ, मांय तौ नागा ई, जद हरी करै, कीं हाइकू — *सांवर दइया* — 15

लै संभाळ थारौ कविकरम, आभौ, माळा रा मिणियां — *शिवराज छंगाणी* — 19

अगनी मंत्तर, काळ अर भूख, जिन्दगी — *भगवतीलाल व्यास* — 23

❑आलेख

उस्ताद री राजस्थानी-हिंदी कविता : तुलनात्मक दीठ — *कुंदन माली* — 28

❑कहाणी

लाडेसर — *उम्मेद धानिया* — 35

❑अेकल काव्यपाठ

छाती माथै भाटौ क्यूं है ?, सोयां अबै सरै नीं,
इंकलाब री आस में, बोल चिड़कली बोल, रात बावळी,
भींत, लोकराज, राड़ — *राजू सारसर 'राज'* — 41

❑व्यंग्य

राजनेतावां रौ रासिफळ — *शंकरसिंह राजपुरोहित* — 43

❑ओळूं

जनकवि हरीश भादाणी — *सुनील गज्जाणी* — 45

❑काव्य-गोष्ठी

जाण्यौ-अणजाण्यौ — *डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'* — 49

बाप — *डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी* — 50

धरती धंस जावै — *पूजाश्री* — 50

बरखा — *कुमार अजय* — 51

गरीबी — *इरफान अली* — 51

❑लघुकथा

अबला जीवन हाय — *सावित्री चौधरी* — 52

सूझ-बूझ — *पुष्पलता कश्यप* — 53

❑कवितावां

अमावस रौ चांद, मोत्यां रौ चूण — *डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित* — 54

पीड़—दो कवितावां, आंख्यां मांय हंसतौ गांव — *डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र* — 55

परख, बै दिन — *मातुसिंह राठौड़* — 56

म्हारी साख — *मनोज पुरोहित 'अनंत'* — 57

❑पोथी परख

सुवाद रा सबड़का : अभनै रा किस्सा — *बुलाकी शर्मा* — 58

कहाणी-जात्रा में ऊजळ पख रा अैनाण — *डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र* — 61

❑रपट

राजस्थानी कहाणी माथै परिसंवाद 'अैनाण' — *डॉ. नमामीशंकर आचार्य* — 64

संपादक री बात

लेखक नै लेखक रै साथै होवणौ चाईजै

लारलै दिनां बधती असहिष्णुता, कुलबर्गी री हत्या, दादरी कांड अर मानवता माथै बधता साम्प्रदायिक हमला रै खिलाफ, अभिव्यक्ति री आजादी री स्वतंत्रता रै पख में लेखकां जबरी प्रतिक्रिया करी अर साहित्य अकादेमी पुरस्कारां नै पाछौ करण रौ अेक सिलसिलौ सरू व्हियौ। सागै ई सरू व्ही— 'बहस'। सोसल मीडिया सूं लेय'र मीडिया तांई सैंग ठौड़ जबरी बहस। कोई इणनै जरूरी प्रतिरोध बतावै, कोई नाकाफी और किणी मुजब आ राजनीति ही। कोई कैयो अकादेमी स्वायत्त संस्था है, कोई कैयौ विरोध राजनीति सूं निकळ्योड़ौ है। कोई इणनै बिहार चुणाव सूं जोड़ दियौ तौ कोई अकादेमी रै चुणावां सूं, जित्ता मूंडा बित्ती बातां। जिणरौ साहित्य रै 'स' अर कला रै 'क' सूं ई लेणौ-देणौ नीं, वौ भी पूरी खिमता सागै बहस मांय सामल।

पण 'अपरंच' अेक जिम्मेवार पत्रिका होवण रै नातै इण विसय माथै बात राखणी जरूरी समझै। आ बात तौ पक्की है के पुरस्कार पाछा करणिया किणी अेक विचारधारा या किणी आन्दोलन रौ हिस्सौ कोनी। कांई आपां उदयप्रकाश, अशोक वाजपेयी, नयन तारा सहगल, नन्द भारद्वाज, मुनव्वर राणा इत्याद लोगां नै अेक जमीं माथै देखां। कारण न्यारा-न्यारा व्है सकै अर कारण बहस रौ मुद्दौ भी व्है सकै। प्रतिरोध रै इण तरीकै सूं आपां राजी-बेराजी व्हैय सकां, पण आ बात पक्कायत है कोई भी कुलबर्गी या दादरी रै हत्यारां रै पख मांय कोनी। आ बात भी है कै विरोध इत्तौ जबरौ के 'मध्यम वर्ग अपना ध्यान स्वयं रखे' जैड़ो असहिष्णु बयान देवणिया लोग कैवै के म्हैं बात सारू त्यार हां।

चिन्ता रौ विसय औ के आं सोसल मीडिया अर मीडिया री प्रायोजित गैर जरूरी बहस लेखक वरग रौ ध्रुवीकरण कर दियौ। औ वैचारिक ध्रुवीकरण नीं है, साफ-साफ राजनीतिक ध्रुवीकरण है, जिणरौ साहित्य अर लेखक सूं कीं लेणौ-देणौ कोनी। हळकी भासा रौ प्रयोग अर हळका आरोप वैचारिक ध्रुवीकरण अर वैचारिक प्रतिरोध सूं नीं उपजै। इण सूं लेखक आन्दोलन कमजोर व्हैला। अपरंच री दीठ मांय आ बात साच है के विरोध रा तरीका कीं ओर भी व्है सकता हा अर इणसूं कीं लोग पख अर विपख मांय होय सकै, पण लेखक नै हर हाल मांय लेखक साथै होवणौ चाईजै। कलाप्रेमियां मांय कला-पख अर मानवीय पख नै अंगेजतां अेक ठावी बहस व्हैणी चाईजती। स्यात आ सोसल मीडिया री खराबी है के इणरै मारफत विसय सागै केई गैर जरूरी लोग रम्मत रमै।

'अपरंच' अभिव्यक्ति री स्वतंत्रता रै सागै है, लेखक रै सागै है। 'अपरंच' दुनियां रै मांय मानवता माथै होवण वाळै हर हमलै रै खिलाफ है अर पेरिस हमला मांय सहीद लोगां नै निवण करै।

पारस जी सौ बरस करग्या, आ म्हारै अर 'अपरंच परिवार' सारू अेक घणी निजू क्षति है। वां री इच्छा मुजब वांरी देह 'मेडिकल कॉलेज' मांय पढेसरयां री पढाई सारू दान करीजी। वै अगस्त महीनै सूं ईज अस्वस्थ हा अर सैवट वा 'स्याम छांवळी' वांनै आपरा कर लिया। अपरंच वांरौ अेक मिसन हौ अर म्हारी बणती कोसीस, लगोलग इण माथै काम चालतौ रैवैला। पारस जी म्हारा मायत हा, गुरु हा अर पाठक हमेस पत्रिका रौ मायत व्है। आप सब चिट्ठी-पत्री अर आपरै सुझावां सूं, सफींटवी दीठ सूं म्हनै पारस जी री कमी मैसूस नीं होवण देवोला, औ विस्वास है।

'अपरंच' रा लारला दोनूं अंक बगत टळ्यां आया है, इण सारू माफी, कारण स्यात आप समझौ।

-गौतम अरोड़ा

अपरंच रा आजीवण सदस्य

नांव	ठौड़	रसीद सं.
1. श्री रमेश उपाध्याय	दिल्ली	10
2. स्व. श्री ईश्वर चंद्र अरोड़ा	जयपुर	13
3. श्री नंद भारद्वाज	जयपुर	24
4. श्री दाऊलाल अरोड़ा	बड़ौदा	26
5. श्री चैनसिंह परिहार	जोधपुर	33
6. श्री रतन शाह	कोलकाता	34
7. श्री नारायण राहड़	सूरत	36
8. श्री सत्यप्रकाश अरोड़ा	जोधपुर	37
9. श्री मोहन आलोक	गंगानगर	41
10. श्री सूरज प्रकाश जी डाबला	पीलीबंगा	49
11. श्री फारुक आफरीदी	जयपुर	53
12. श्री नारायण सिंह पीथल	जयपुर	55
13. श्री मीठेस निर्मोही	जोधपुर	56
14. श्री मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट	जोधपुर	62
15. श्री श्यामसुंदर भारती	जोधपुर	66
16. श्री मदन गोपाल लढ़ा	महाजन	70
17. डॉ. अर्चना शर्मा	चूरू	—
18. श्री रामचरण परिहार	जोधपुर	196
19. डॉ. भरत ओळा	हनुमानगढ़	71
20. डॉ. हरदान हर्ष	जयपुर	—
21. डॉ. सूरज राव	अजमेर	—

● *पंचामरत : अेक*

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

रामेश्वर दयाल जी श्रीमाली रौ जलम 5 अप्रेल 1938 नै कराची (पाकिस्तान) में हुयौ अर 30 मार्च, 2010 नै जालोर में आप देवलोक सिधारग्या। आप गद्य अर पद्य दोनां में आपरी लेखनी सूं चावा-ठावा हुया। श्रीमालीजी राजस्थानी लोकजीवन अर ग्रामीण संवेदना रा सामरथवान कवि हा। शिक्षा विभाग में प्रधानाध्यापक अर जिला शिक्षा अधिकारी रैया। बावनौ हिमाळौ म्हारौ गांव, कुचमादी आखर अर म्हारा मीत गंगासिंह आपरा कविता-संग्रै हा। इणरै अलावा कहाणी अर आलोचना री पोथ्यां ई छपी। 'म्हारौ गांव' नै साहित्य अकादेमी पुरस्कार ई मिल्यौ। आज रै जीवन में मौजूद राजनीतिक अर सामाजिक विडम्बनावां माथै आपरी कलम सटीक व्यंग्य करै।

सम्पर्क : विश्वनाथ श्रीमाली, 22-ए, शारदा कॉलोनी, गांधी पथ, क्वींस रोड, जयपुर

सतजुग

आज ई सतजुग है
अटळ है मिनख
जुग सत्त नै निभावण में

हर जुग रौ नित्त सत्त
भूख है
रोटी है
पेट री भट्टी में रात-दिन सिळगता
लाल अंगारा
हितचिंतक रिसी रौ
बानौ पैरयां

आज ई ऊभौ है
छळ रौ विस्वामित्र
मिनख रौ सो क्यूं
झपट-खोसण नै

मायावी मसीनां
आज ई सपना बुणण में
लागी है

आज ई
छिप्यौ अैश्वर्य रै फूलां में
अभावां रौ काळौ नाग
डसै
पळ दर पळ
कळा रै रोहिताश्व नै
आज ई पड़ी है
अडाणी
प्रतिभा-सम्मान री
तारामती
बेबस-सी
किणी अरबपति सेठ री
तोंद रै तळै

बोली लागै मिनखपणै रै
हरिचंद री

बेचण
सपनां रौ काठ-कापड़ौ

आज ई सतजुग है
अटळ है मिनख
जुग सत्त नै निभावण में।

⌘⌘

अरज

म्हनै अजनम्यौ ई रैवण दौ।
जलम ले ई लियौ
तौ कांई ?
थे म्हनै बांध देवोला
जात/कै धरम / कै परिवार
कै देस
रै नाम री
रूढियां री मोटी जेवड़ी सूं
अर रस्सी रा दोनूं ई छेड़ा
अेकै साथै
इण भांत खांचोला
कै नीं तौ म्हनै मरण देवौ
अर नीं जींवतौ ई राखौ

थांरै बंधणां री नागफांस
केई-केई सोनल रंग धर आसी
कदै ई मा री ममता रौ रंग
कदै ई बाप रै सहारै रौ रंग
कदै ई भाई री भुजा रौ रंग
कदै ई बैनड़ री राखड़ी रौ रंग
कदै ई देस री रोसनी रौ रंग
कदै ई धरम रै जेहाद रौ रंग

थे रंगीली / रेसमी / आंटीली
गांठां नै
नवौ-नवौ नाम देय'र
कसोला / खांचोला

थे नेह / नै हेज / नै मानता रा
आंधा दीवा
इण भांत म्हारै चारूंमेर
दीपावोला

कै औ अंधकुऔ / म्हनै
आभै जिसौ खुलौ लागै
खुली हवा सूं हो जावै
नमूनियै रौ भौ
अंधारै में रोसनियां री ताराफूलियां
झरती भावै
नै सूर री सांचेली किरणां
देखण री लळक
लामणीज आवै

कमरां री खिड़क्यां रै चारूंमेर
लटकावोला थे
परम्परावां रा पूर होयोड़ा
कसीदौ काढ्योड़ा पड़दा
जिण सूं
थांरी कार में जीवण दीखै
अर
हकीकत नै हामळण री
हीमत को होवै नीं

दिल रै दिमाग माथै जड़ देवोला थे
धरम रै लोह सूं ढळ्या
अलीगढी ताळा

संस्क्रितियां रै जादू री
खुल सिमसिम गुफा रै
अदीठ खजानै माथै
कोई भारी छीण
थांरै वास्तै फूल सूं ई हळकी
अर म्हारै वास्तै
भाखर सूं ई भारी

मूठियां में बंद कर देवोला
जिन्दगी विगसावण वाळौ
मुधरौ वायरौ

म्हैं ज्यूं इण पेट में बंद हूं
अर मा रौ लोही पीय'र जीवूं हूं
बंधू हूं
बारै ई थे म्हनै
जात / नै देस / नै मजहब
री भींतां में
कैद राखोला
मिनख रौ लोही पा-पा'र
जिवाओला
अर प्यालां रौ नाम
कदैई सेवा / कदैई त्याग / कदैई बळीदान
इण भांत राखोला
कै वौ रगत ई
दूध निजर आवै
अर थे नित पावता जाओ रगत
कोरौ रगत
म्हैं तौ गरभ में ई थांरी
नित-नित री बात सुण-सुण'र
हैरान हूं
बारै कांई ठा कांई होसी ?

अणजनम्यौ ई रैवण दौ महनै।
⌘⌘

सरधांजळी विसेसांक

अपरंच रौ अक्टूबर 15-मार्च 16 अंक, अप्रैल रै आखिर तांई आप कनै पूगैला। औ अंक पारस जी अरोड़ा री लेखन-जात्रा नै समरपित है।

आप इण महताऊ अंक सारू आपरा आलेख, संस्मरण, महताऊ कागद, फोटू कै पारसजी सूं संबंधित दूजी कोई सामग्री अपरंच नै मेल कर सकौ या संपादक रै पतै माथै डाक सूं भिजवाय सकौ :

A-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर 342 005 (राज.)
दूरभास : 0291-2720796, 7877982810, 9413961800
e-mail : apranchrajasthani@gmail.com

वासु आचार्य

वासु आचार्य रौ जलम 11 जनवरी 1944 नै बीकानेर में हुयौ अर 14 फरवरी, 2015 नै सुरग सिधारग्या। वै आपरी कवितावां में बदळतै समाजू हालत अर उण में छटपटावतै मिनखीचारै नै दरसायौ है। कुदरती अर मानवीय परिवेस सूं जुड़'र आपरी लेखनी नै सैंजोर रूप सूं बरती। सरणाटौ, सीर रौ घर, खटारा साइकिल रै सायरै, सूकौ ताळ (कविता-संग्रै) छप्योड़ी पोथ्यां। 'सीर रौ घर' माथै केन्द्रीय साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिल्यौ।

सम्पर्क : जयदीप आचार्य, बाहेती चौक, बीकानेर

फरक थारै अर म्हारै बिचाळै

सुख अर दुख
आप आपरौ हुवै
म्हारौ दुख—
तनै अकैकारौ लाग सकै
अर म्हारै सुख माथै
तूं दांत काढ सकै

तनै जंगळ में
खेजड़ै माथै बैठी
अेकल अेकली चिड़कली
कोई खास बात नीं लखावै
पण म्हारै काळजै
गैरी उदासी भर जावै
तिरण लागै—
म्हारी आंख्यां में
कच्चा टापरा
उदास झूंपड़्यां

जठै लगोलग
नीं तौ लालटेण सूं
कोई धुंवौ उठै
अर नीं ही रसोयां सूं
ईं में म्हारौ
कीं दोस नीं है
म्हारा भायला
कै थनै खुलै आभै में
झपटता केई बाज
अर बचणां चावता
केई कबूतरां रै
जीवण अर मरण रै
खूनी खेल में
बाज रौ झपटणौ
घणौ सुहावै

अर म्हैं डरूं-फरूं हुयै
कबूतर री पीड़ सूं
सूकण लागूं मांय रौ मांय

म्हैं जठै खड़्यौ हूं
बठै री जमीन रौ
आपरौ न्यारौ सोच है
अर न्यारी निजर

म्हैं कैयौ नीं
सुख अर दुख
आप आपरौ हुवै।
⌘⌘

हाऊड़ौ— हाऊड़ा ई हाऊड़ा

उमर रै बखत मांय
मन घणा ईज
हिचकोळा खावै

कदैई बीत्योड़ा वसंत-पतझड़
याद आवै
तौ कदैई सियाळा-ऊनाळा
कुण याद नीं आवै—
मां-बापू सैंग ई जका नीं रैया

कै अचाणचक
बरसाळी मांय बैठी
बेटै री बहू रौ
बड़बड़ावणौ सुणीजै
वा पोतै नै सुवावण खातर
उणनै डरावती— थोड़ी तड़क'र
थेपड़ती कैवै
सूयजा बदतमीज सूयजा
नीं तौ— हाऊड़ौ खाय जावैला

मन-मन नै
फेरूं लारै लेजावै

ठीक आ ईज धमकी-थेपड़ती
म्हारी मां री
जकी म्हनै देवती ही
सूयजा बाळनजोगा सूयजा
नीं तौ हाऊड़ौ खाय जावैला
अर म्हैं काठी आंख्यां मींच'र
मां सूं चिप'र
सूय जावतौ हौ
अबै म्हैं— घणी बार सोचूं
औ हाऊड़ौ कुण है ?
कैड़ौ है ?
मुळकूं मन ई मन
हाऊड़ौ कीं नीं फगत
तीन आखर— डर रा, भै रा

जद फेरूं म्हनै लागै
कै हाऊड़ौ तौ

पूरी पून मांय ई छायोड़ौ है अबार
म्हनै आजकालै—
च्यारूंमेर हाऊड़ा ई हाऊड़ा मैसूस हुवै
पण— अबै बीं रै डर सूं
नींद आवण री ठौड़
नींद उचट जावै

कोई अैड़ी ठौड़ नीं लाधै
जठै हाऊड़ौ नीं हुवै—
बाग-बगेच्यां सैर-गांव
बंगला-कोठ्यां
पांच तारा री होटलां
च्यारूंमेर— हाऊड़ा ई हाऊड़ा
रंग-बिरंगा हाऊड़ा।
⌘⌘

देवता

नीं गयौ कदै
कोई दिन खाली
कै समझ पकड़्यां पछै
नीं रोया हुवै
आपरा रांडी रोवणा
देवता रै सन्मुख

कदै हारी बेमारी
कदै कोई और लाचारी
अेक अस्तुति रै सागै
हजारूं हजार दुख
घोळतौ रैयौ
देवता रै कानां

आज लखायौ अचाणचक
अै सब पड़पंच
सब मिथ्या भरम
सब जी रा जंजाळ

अनोखै उजास रौ पळकौ
चिलकग्यौ
अेक छिन
हुयौ जी में पिछतावौ
फालतू ई इतरा बरस
करग्यौ दुखी इयां
बापड़ै देवता नै
जकौ सुणतौ रैयौ चुपचाप
अर मुळकतौ रैयौ
सदा ई

आज बीं सूं
खाली वीं सूं ई मिळूंला
घणै चाव सूं मिळूंला

नीं कोई अस्तुति
नीं ई कोई भजन
बस बीं रा चरण
बस बीं री सरण

पण औ कांई—
आज ईज देवता
मूरत सूं निसर
नीं ठा कठै गया
रैयगी पत्थर री
खाली सिला
जिण में देवता नीं हा
बाकी सब
बियां रा बियां
हुवतौ रैयौ कीरतन
मिंदर में आखी रात।
अर म्हारी आंख्यां
ताकती रैयी आभौ
देवता मूरत में नीं
मन में हुवै।

⌘⌘

● *पंचामरत : तीन*

सांवर दइया

सांवर दइया रौ जलम 10 अक्टूबर, 1948 नै हुयौ अर 30 जुलाई 1992 रै दिन वै संसार त्याग दियौ। कविता, कहाणी, व्यंग्य आद विधावां में वै बखाणजोग काम कियौ। राजस्थानी कविता में 'हाइकू' री सरुआत करी। समाजू जथारथ नै गैराई सूं खंगाळता थकां वै आपरी रचनावां में बरत्यौ। जीयाजूंण में आवती तकलीफां, वांरै खिलाफ मिनख री आथड़ नै वै मुळक रै साथै सिरजी। राजस्थानी कहाणी में ई वांरी अेक ठावी ठौड़ रैयी है। वै शिक्षा विभाग री पत्रिका 'शिविरा' रा सम्पादक ई रैया। वांरी छप्योड़ी पोथ्यां में— मनगत, काल अर आज रै बिच्चै, आ सदी मिजळी मरै, हुवै रंग हजार (कविता-संग्रै) अर असवाड़ै-पसवाड़ै, धरती कद तांईं घूमैली, अेक दुनिया म्हारी, अेक ही जिल्द में, पोथी जिसी पोथी (कहाणी-संग्रै) है। 'अेक दुनिया म्हारी' नै केन्द्रीय साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिल्यौ, इणरै अलावा ई केई पुरस्कार अर सम्मान मिल्या।

सम्पर्क : डॉ. नीरज दइया, सी-107, वल्लभ गार्डन, बीकानेर-334003

थारै हुवण री

पगां हेठै धरती है
माथै ऊपर आभौ
च्यारूंमेर खुली हवा
हवा में
थारै होवण री सोरम
कठैई आवूं-जावूं
म्हारै सागै थूं
अबै म्हनै डर किण बात रौ!
⌘⌘

आस्था

उजाड़ में ऊभै
ठूंठ रै ठोला ठरका
जद कदै दीठै
मुळकती कूंपळ कोई
आस्था रा सुर
गाढा हुय जावै
जीणौ जरूरी लखावै!
⌘⌘

स्याणा लोगां सुणौ

बै आवै
गूंगां नै टाळै
तिलक करै
पीठ थपथपावै
उणां री गूंग नै जगावै
बिड़दावै
गूंगां नै गोळी रा गुण बतावै
अष्टपौर अभ्यास करावै

सात खून माफ री छूट देय'र
सड़कां माथै खुला छोड देवै
थोड़ी ताळ पछै सुणीजै
पग-पग धमाका

दुनिया रा
स्याणा लोगां सुणौ—
थांनै
अर थांरी अक्कल नै
खुणियां तांई सिलाम!
⌘⌘

अेक दीवौ

आज म्हैं
दिन में
सूरज सूं सगपण करयौ है

आज म्हैं
रात में
अेक दीवौ जगायौ है

सुणौ
अंधारै अर आंधी नै
सनेसौ कर दीजौ!
⌘⌘

मांय तौ नागा ई

नागा जलमै सैंग
गाभा पैर परा सूधा दीसण लागै
पण मांय तौ नागा ई रैवै
घर-घर बुद्धू बक्सै रौ रोग
नागी नाचै नार
नागा नै नागा देखै
अर
बिना नागा देखै।
⌘⌘

जद हरी करै

बूढै बैसाख
अर बाळणजोगै जेठ री बाथां में
बळी तपी
हरी हुवण री हूंस दाब्यां
सूती धरती
अंग-अंग भीजै

बा रीझै
मुळकै-गावै
जद हरी करै सावण!
⌘⌘

कीं हाइकू

उडणौ : जीणौ
चिड़ी आवै 'र कैवै
पींजरौ : मौत।
●
थे बांचौ पोथा
म्हारै नांव करद्यौ
ढाई आखर।
●
जमीं सूं जुड़
सूरज कानी देख
हां, तूं ऊंचौ आ।
●
आडौ तौ खोलौ
भोर बीनणी लाई
उजास-हांती।
●
रोजीना फाटै
उमर-डायरी सूं
सांस रौ पानौ।
●
मुळकूं आज
होठ रैवै नीं रैवै
कांई ठा काल।
●
तावड़ौ आछौ
म्हारै पगां तौ पड़्यां
छीयां में छाळा।
⌘⌘

शिवराज छंगाणी

शिवराज छंगाणी रौ जलम 21 नवम्बर, 1938 नै हुयौ। आप सन् 1958 सूं इज कलम री कारीगरी दिखावण लागा। छगांणी जी हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं भासावां में लगोलग लिखता रैया अर अनेक विधावां में रचना करी। राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति अकादमी, बीकानेर रा उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष अर मानद सदस्य रैया। उणियारा, ओळखाण, मिनखां री माया, जिण विध राखै राम, ऊजळा आखर, इक्कड़-बिक्कड़ अर लै संभाळ थारौ कविकरम आपरी छप्योड़ी पोथ्यां है। कीं पोथ्यां रौ आप संपादन ई कियौ।

ठिकाणौ : नत्थूसर गेट रै मांय, बीकानेर (राज.)

लै संभाळ थारौ कविकरम

बखत रै बदळाव
सागै
बीतग्यौ थारौ सोच
थारी समझ,
थारै सोच रा कच्चा ढूंढा
लैवड़ा छोडता
इतियास रै
पुरातत्त्व खातै में
खतीजग्या-सा लागै
म्हनै मालम है
समंदर मंथण री कथा
अर
बिलोवणै रौ
इमरत-विख—
काळ-कूट तौ

महादेव पीग्यौ
पण अब किणरी खिमता ?
घर-घर
रामकथा बांचीजै
क्यूंकै
बिण रा पाथर तिरिया
अर
आज तांई लोगड़ा
आपरी तिकड़म रा पाथर
तिरावण लाग रैया है
गूंगा-चमगूंगा
उण
जटायु अर संपाति नै
बिसरावता लागै—
स्वारथ रै सोन मिरगलै रै
लारै बेभाण भागै
बिथा-कथा
लीरम-लीर
हुवती-सी लागै
कठै घड़ीजै
अब
काळिदास
भारवि
अर माघ,
ना बाल्मीकि रौ आसरौ
ना तुळसीदास रौ सासरौ
कठै गई प्रेरणा
कठै गई फटकार
अमूजौ ई अमूजौ
समाज अर संस्कृति री
पिछाण
ना दीखै नामोनिसाण
बात-ख्यात

पट्टा-पीढियावळी
हाल-हकीगत
दवावैत
सिलोका
मेलीजग्या
जूनै पोथीखानां मांय
दीठ रौ आंतरौ
लखावै—
छूंतरा-पड़छूंतरा
उतारता लागै
बात रा धणी भाजै
बूंबा-बगना
बावळा
आवळा-कावळा!
⌘⌘

आभौ

औ आभौ
अजै तांई
दिसावां रै कांधां माथै
खड़ौ लागै
दिसावां सूं दिसावां
मिळ्योड़ौ
खूणां सूं खूणां
भळै
अळगाव कठै?
रेखागणित
जद समझ में आसी
सगळी दिसावां
खूंणा-खचूणा
थारा-म्हारा ई लखासी।
⌘⌘

माळा रा मिणियां

आसण माथै बैठ'र
माळा रा मिणियां
गुड़कावतौ जावै
पण ध्यान राखजै
मिणिया फोरणा
मिणिया पोवणा
अर मिणिया टूपणां मांय
घणौ आंतरौ होवै—
कैवत है—
माइतां री माळा रा
पुन्न आडा आवै
पण थूं अजै तांई
पड़लौ सूद कमावै
पड़लौ सूद खावै
पाप हुवौ चावै पुन्न
माळा रा मिणियां
गुड़कावै, गुड़कावतौ जावै।
⌘⌘

● *पंचामरत : चार*

भगवतीलाल व्यास

भगवतीलाल व्यास रौ जलम 10 जुलाई 1941 रै दिन उदयपुर जिलै रै गांव गिलूंड में हुयौ। आप अेम.अे. कियां पछै बी.अेड. में स्वरण पदक हासिल कियौ अर पछै अेम.अेड. करी। आप सन् 1960 सूं हिन्दी अर राजस्थानी में सास्ती कलम चलाई। बगत सूं बाथेड़ा करता मिनख री जूंझ नै समझै अर समझावै। बदळतै बगत रै मिजाज नै परखै, मिनख अर सबद रै संबंधां नै अरथावै। अणहद नाद, अगनी-मंत्तर, सबद-राग आपरी चावी पोथ्यां है। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर अर प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सूं पुरस्कृत हुया अर 'अणहद नाद' नै केन्द्रीय साहित्य अकादमी रौ पुरस्कार मिल्यौ।

ठिकाणौ : 35, खारोल कॉलोनी, फतहपुरा, उदयपुर (राज.)

अगनी मंत्तर

आ, धरती!
थारी हथेळी दै
म्हारा हाथ में
म्हैं कोर दूं
इणमें मेंहदी रा
पांन-फूल।

ला, आकास!
थारौ दुसालौ
दे म्हनै
म्हैं इण में टांक दूं
दो-चार
और सितारा।

ला, गंगा!
थारी धार
सूंप दे म्हनै
म्हैं पी जाऊं
इणरौ सगळौ
जैर
अेक दांण
फेर बण जाऊं
नीलकंठ
थनै कर दूं
निरमळ
आ, पून!
म्हारै कनै बैठ
तूं हांफ क्यूं रैयौ है?
छनीक विसरांम कर
थनै सौरम रा
छंद सुणाऊं
सबदां रौ
अरथ समझाऊं!

आ, अगन!
इयां काळी / कियां पड़गी री तूं
क्यूं लजावै बावळी
कुळ रौ नांव
क्यूं फिरै चेतणा विहीण!
आ, नैड़ी
चेतण कर दूं थनै
अगनी-मंत्तर सूं।

जे तूं ही बुझगी / तौ—
किण सूं
जळसी मिनखपणै
रा दिवला

किण सूं / परगटसी
आतम रौ उजास
किणरै आंगणै रमसी
भविस रा
बाळ-गोपाळ!
⌘⌘

काळ अर भूख

हुलासी रै गांव पड़्यौ है
काळ इण बरस भी
काळ कोई नुवौ सबद
नीं है हुलासी रै हियै
सालूंसाल भरीजता मेळा
अर डकरीजतौ काळ
इत्तौ ही आंतरौ है
हुलासी सारू दोनां में
अेक में वा व्हेवै है
अर दूजौ उण में व्हेवै है।
●

हुलासी रै चैरै रा सळ
सूंघ लिया करै है
काळ नै अगाऊ
जिनावरां री ल्हासां रा
अदीठा ढेरां में
उण री भांपण्या
बांच लिया करै है
आभै में मंडियोड़ौ
सोग-गीत
उणरै ओठां माथै
तौरै स्वाद री
झीणी परत जम जायां

करै है
बीतै दिनां री याद-सी।
●

पण डाकी काळ
जद साव मरजादा लांघ
हुलासी री हथेळी माथै
चढबा लागै तौ
वा मून तोड़
ऊभी व्है जावै
कुल्हाड़ी लेय'र
उण रा निबळा डील में
सौ-सौ हाथियां रौ
बळ संचरै
उण री मिचमिची
आंख्यां में उतर जाया करै है
सगळी सिरावां रौ रगत
अर वा चारूंमेर भाळै
ना'र री दकाळै।
●

या हुलासी री भूख है
या ही'ज काळ सूं भिड़सी
डूंगर तोड़सी, नहरां खोदसी
रूंख उगासी
फावड़ै, गेंती अर साबळ रै पांण
काळ रौ माथौ बाढसी
सून्याड़ धरती माथै
काल दिनूगै पैलां
या ही'ज हुलासी मांडसी
नुवा अबोगद सातिया।
⌘⌘

जिन्दगी

धूप, धुंऔ, धुंध और धूळ जिन्दगी
अणकूंत्यां जनमां री भूल जिन्दगी
घणै-घणै जतन सूं सींचियौ गुलाब
डाळ-डाळ उगी या बबूळ जिन्दगी

दूर-दूर आस अर निरास जिन्दगी
समदर री अणबुझी प्यास जिन्दगी
रात-रात पाणी रा सुपना संजोवती
दिन ऊगां अणमणी उदास जिन्दगी

लहर-लहर उछळती उछाळ जिन्दगी
ताळ नै तलासती कुताळ जिन्दगी
गैली या डगर-डगर डोलती फिरै
डंकै री चोट पै सवाल जिन्दगी

घाट-घाट घूमती उचाट जिन्दगी
अणबांच्यौ मिनख रौ लिलाट जिन्दगी
राजा अर रंक री अेक दिखै है
पण कोनी इतरी सपाट जिन्दगी

सबद-सबद सौरम रौ वास जिन्दगी
सांस-सांस काळ रौ कपास जिन्दगी
अणगायौ सामवेद हिचकी रौ
आंसू री रांपी, रैदास जिन्दगी

⌘⌘

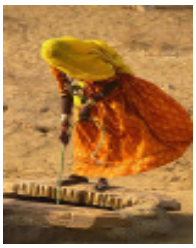

● *आलेख*

उस्ताद री राजस्थानी-हिंदी कविता : तुलनात्मक दीठ

कुंदन माली

आलोचना रै सांम्ही रचना अर रचनाकार अक्सर नुंवी-नुंवी चुणौतियां पेस करिया करै जिणरौ बगतसर जवाब आलोचना नै देवणौ पड़ै। इणमें अेक महताऊ सवाल औ ई है कै कोई रचनाकार अेक सूं बेसी भासावां में क्यूं लिखै? इणरै मूळ में कांई कारण है? आ उणरी मजबूरी है कै सौक? कै पछै कोई रचनात्मक दबाव है कै जरूत? औ सवाल खासौ जटिल अर संस्लिस्ट किसम रौ है, जिणरौ जवाब देवणौ आलोचक री जिम्मेदारी बण जावै। कविता अेक इस्यौ कारज-वैपार है जिणरी तासीर सर्वसमावेसी होवण रै कारण आ फगत कवि रौ इज नीं, बल्कै उणरै ओळावै आखै जगत अर मिनखाचारै रौ लेखौ लेवण में सिमरथ विधा मानी जावै। मिनख रै चूकतै सिरजणात्मक वैपार रै मूळ में मिनख-मन री दोगाचिंती अर बेचैनी, असंतोख अर बदळाव री मंसा नै देखी जाय सकै। इणरौ अेक निचोड़ औ निकळै कै रचनात्मकता अर मिनख-मन रा अंतरविरोध अेक सिक्का रा दो जरूरी पख है, जिणरौ कोई पर्याय नीं है। तौ पछै कांई औ कैवणौ लाजमी अर वाजिब व्हैला कै रचनाकार रौ अेक सूं बेसी भासावां में लिखणौ ई कथ्य रै सुभाव अर पाठक समुदाय (जिण में कविता रौ श्रोता समुदाय ई सामिल है) नै केन्द्र में राखनै उणरी खुद री दोगाचिंती रौ परिणाम इज मान्यौ जावणौ चावै? इण सवाल री गैराई में जावण रौ मतलब है— सिरजक रै मनोजगत में प्रवेस करण री कोसिस करणी।

समकालीन राजस्थानी कविता रै हलका में गणेशलाल व्यास 'उस्ताद' रौ नांव अर ख्याति फगत अेक महताऊ अर जरूरी कवि रै तौर माथै इज नीं बल्कै अेक जननायक रै तौर माथै ई चावी है। अेक कवि अर जननायक री दोवड़ी भूमिका में उस्ताद री समाजूसेवा दो स्तरां माथै सक्रिय रैयी। आजादी मिलण सूं पैली वाळै दौर में उस्ताद कविता रै मारफत समाजू चेतना नै जगावण रौ काम करियौ जदकै आजादी मिल्यां पछै वाळै दौर में उणां कविता रै जरियै समाजू बदळाव रै सुर नै बुलंद करियौ। मतलब कै उस्ताद रै अठै कविता अेक समाजू साधन रै तारै माथै न्यारी-न्यारी भूमिका निभावती आई। उस्ताद कविता नैं सबदां री रम्मत नीं माननै

उणनै समाजू-चेतना, बदळाव अर प्रतिबद्धता रौ कारगर साधन मानता हा। उस्ताद रै वास्तै कविता वैवारिक साच अर सक्रियता रौ पर्याय है; जिणरै केंद्र में लोगां री भेळप अर भाईचारौ; मानवीय सचेतना अर समाज री तरक्की मौजूद रैया करै। उस्ताद री कविता भविस नै संबोधित करै अर कलात्मक फूटरापै सूं बेसी ठौड़ अठै समाजू जथारथ नै दिरीजी है। इण कविता रै केंद्र में हमेस मिनख अर कवि रौ वैश्विक नजरियौ इज रैयौ है अर असल में आ बात ईज कवि री केंद्रीय चिंता ई है। ठेठ 1935 में अेक गीत में उस्ताद लिखै—

जागौ मरदां जाय जमांनौ
करतब पाड़ै हेलौ मांनौ
खुद अमर नींद सो जांणौ
पिण देस अमर कर जांणौ है।
निबळां नै बळ देवण नै
सबळां सूं लड़ मर जांणौ है।
सखरी काया भरी जवांनी
रण री बेळा फेर न आंणी
रणखेत रह्यां सिर ऊंचौ
डर भाग्यां जनम गमांणौ है।
निबळां नै बळ देवण नै
सबळां सूं लड़ मर जांणौ है।

(कलम रौ उस्ताद, पेज 53)

आजादी पैली री कविता में उस्ताद मानवीय मूल्यां नै उजागर करण रौ काम करै जदकै आजादी मिल्यां पछै वाळै दौर में वै मानवीय मूल्यां में आवण वाळै बदळाव अर मोहभंग प्रगट करै। इण ढाळै देखां तौ उणां री कविता रौ अेक छेड़ौ मिनख री हूंस नै प्रगट करतौ निगै आवै अर दूजौ छेड़ौ मिनखाजूंण री विडरूपतावां नै सांम्ही लावै।

देस नै आजादी मिल्यां पैली वाळा दौर में उस्ताद जद राजस्थानी नै आपरी काव्यभासा बणाई ही तौ इणरै मूळ में पक्कायत अेक सूं बेसी कारण रैया व्हैला। अेक तौ औ इज कै आजादी री मंजिल नै हासिल करण वास्तै वै जनता नै अेकजुट होवण रौ हेलौ पाड़णौ चावता हा, इण वास्तै उणां रै नजीक राजस्थानी जन-आह्वान रौ माध्यम बणनै कारगर साबित व्है सकी। उस्ताद खास करनै गीतां रै मारफत इज आपरी बात लोकमानस सुधी पुगावण री समरथ कोसिस करी। विजयदान देथा री संपादित पोथी 'कलम रौ उस्ताद' में अै चूकता गीत सामिल है, जिण रौ प्रकासण बरस 1984 में व्हियौ। इणी'ज भांत उस्ताद रा लिख्या हिन्दी गीत अेक पोथी में संकलित है। 'आग' शीर्षक रै त्हैत इण संग्रै रौ प्रकासण 1982 में व्हियौ। बरस 1987 में वियदान देथा उस्ताद रै जीवन अर सिरजण माथै केंद्रित अेक आलोचनात्मक पुस्तिका 'हमारा उस्ताद' नाम सूं प्रकासित करी। इणरै टाळ पत्र-पत्रिकावां में उस्ताद री देवनागरी में लिखी कुछेक उर्दू कवितावां ई उण दौर में छपनै सांम्ही आई। कुल मिलायनै

उसताद री राजस्थानी अर हिंदी कविता माथै बात-बंतळ करती बगत आपां रै सांम्ही फगत 'कलम रौ उस्ताद' अर 'आग' रौ इज आधार मौजूद है।

उस्ताद रा राजस्थानी गीतां में सीधी-सादी सबदावळी, पाधरी भासा अर लोगां नै विस्वास में लेयनै देसहित खातर अेक समान लक्ष्य नै हासिल करण वास्तै हेलौ पाड़ण रौ सुर खास करनै उजागर व्है। उस्ताद कविता वास्तै राजस्थानी नै काम लीधी क्यूंकै वै इणरै मारफत समाज रै हरेक तबका नै साथै लेयनै आजादी रा संघर्ष में जुट जावणौ चावता हा। स्यात वै इण बात नै मानता हा कै गीत इज अेक इसी विधा है जिणरै माध्यम सूं अणगिणत लोगां नै अेक साझा लक्ष्य वास्तै लांबै बगत सुधी अेकठ करनै राख्या जाय सकै अर उण बगत चूकतै देस में अेक इज सुर बुलंद हौ, अर वौ हौ आजाद होवण रौ। उस्ताद असल में उण बगत मिनख री चेतना नै जगावणी चावता हा अर मिनख रै अंतस में पेठनै उणनै सक्रिय करण रै वास्तै अेक घनीभूत संवेदन अर भावना रै केंद्रीयकरण री दरकार व्हिया करै अर औ काम, उस्ताद री दीठ सूं, गीत रै मारफत इज संभव व्है सकै अर गीत तौ फगत अर फगत कोई आपरी मायड़ भासा में इज उगेर सकै अर स्यात नीं बल्कै पक्कायत औ कारण रैयौ व्हैला कै उस्ताद आपरी कविता अर गीत राजस्थानी में लिख्या—

थूं भीड़ा सूं भय खाय परण्या डरै मती
वै जगत उबारै सूरमा, ज्यांरा लड़तां रा सिर जाय
अै डरियोड़ा मर जाय, साजन डरै मती
अै लांठा भड़ बाजै घणा
अै दौरा दिन व्है देस रा, जद आहळाणौ कर जाय
थूं उण गेलै मत जाय, परण्या डरै मती।

(कलम रौ उस्ताद, पेज 105)

उस्ताद आपरी कविता में सर्वव्यापी दीठ सूं काम लेवै अर औ इज कारण है कै आजादी रै पैली वाळै दौर में उणां री कविता अर गीतां में मौजूद आक्रोस अंग्रेजां रै खिलाफ हौ तौ आजादी मिल्यां पछै ई उणां री कविता में औ आक्रोस बराबर मौजूद रैयौ पण इणरै मूळ में वैवस्था रै बदळाव अर कमजोर कमतरिया तबका नै हक-हकूक दिरावण री बात अवस करनै उजागर व्ही। कवि रौ मोहभंग, समाजू विद्रूपतावां, अन्याव अर चूकती भांत रा शोषण रै खिलाफ कवि कदैई चुप व्हैयनै नीं बैठ सकै अर वौ समाज में बुनियादी बदळाव रै वासतै इज अबै आपरी कविता नै अेक कारगर औजार बणायनै सक्रिय व्है जावै। आ इज तौ उस्ताद री समाजू प्रतिबद्धता है। अेक ठौड़ कविता में वै पूछै—

सुख समता री रीत कठै है
आजादी री जीत कठै है
तन रौ जळ बण बेहग्यौ
हलक सूखग्यौ गीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

कान सुणै पण निजर न आवै
वौ वरदांन किसौ सुख लावै
सुणतां मन बिखरै, उण सुर में
जीवण रौ संगीत कठै है
आजादी री जीत कठै है

(कलम रौ उस्ताद, पेज 133-34)

आपांनै आ बात हरगिज नजरंदाज नीं करणी चाईजै कै उस्ताद आजादी री जंग रा जोधार हा अर उण दौर में राजपुताना में भणाई-पढाई रौ आंकड़ौ खासौ कमती हौ। आजादी मिल्यां पछै ई इण समाजू हालत में कोई खास उल्लेखजोग बदळाव नीं आयौ हौ। इण हकीकत रै उजास में कैयौ जाय सकै कै समाज सुधी आपरी बात पूगावण वास्तै उस्ताद रै कनै मातभासा राजस्थानी में लिखणै टाळ कोई दूजौ मारग नीं हौ। अेक समाज-सुधारक कवि रै तौर माथै राजस्थानी भासा उस्ताद नै अेक सूं बेसी स्तर माथै मददगार साबित व्ही, क्यूंकै वै फगत अेक कवि इज नीं, बल्कै अेक सामाजिक कार्यकर्ता; आजादी री जंग रा फौजी; चिंतक अर जथारथवादी कलाधरमी ई हा। मिनख जिण भासा में सपना देखै, उण सपनां नै उण भासा रै मारफत इज व्यक्त करिया जाय सकै अर लोगां री आ भासा राजस्थानी ही, जिणरै पांण उस्ताद लोकचावा कवि बण सक्या। जननायक कवि री भासा जन री भासा सूं न्यारी बिल्कुल नीं व्है सकै।

आजादी रै पैली वाळा दौर में जिनगाणी रा रंग सादा-सरल अर सात्त्विक ढाळै रा हा जिका 1947 पछै इधका जटिल, बहुआयामी, यांत्रिक, अंतरविरोधां सूं सराबोर अर भटकाव वाळा बणग्या। जठै पग-पग माथै मोहभंग रा नजारा सांम्ही आवण लागा। असल में औ संक्रांति रौ दौर हौ अर उस्ताद इण संक्रांति रै दौर रा सबसूं मुखर अर असरदार कवि बणनै सांम्ही आया। इण नुंवै दौर री तमाम दोगाचिंती, उतार-चढाव, आस-निरासा री पड़छांवली अर भ्रमभंग इत्याद मुद्दा उस्ताद री कवितावां, गीत अर अठा तक कै दूहा अर सोरठा रै रूप में प्रगट व्हिया—

जोयलै आंख्यां खोल, जन-मन राजस्थान रा।
गजब गुळ्याचां गोळ, नेतावां रै न्यात री।।
आपस रा अपराध, निसरै पिण बिसरै नहीं।
जनता तणौ विसाद, गादी चढतां कुण गिणै।।
पगां पड़ै सौ 'पास', समता सूं सगपण नहीं।
बड़ै हुकम रा दास, जननायक रै चित चढ्या।।

××

जिण खांधां पग राख, सिरनायक सिखरां चढ्या।
पाक गई जद साख, ठोकर दे अळगा करौ।।

(कलम रौ उस्ताद, पेज 180-81)

संक्रांति रै इण दौर नै उस्ताद 'जुग रौ पसवाड़ौ फेरणौ' कैयौ है अर इणनै आपां जुग रौ करवट बदळणौ ई कैय सकां। इण दौर में लोगां रा सपना खिंड-खिंड व्हेयनै बिखरग्या अर राजनीतिक वैवस्था जनता नै धापनै ठग्या। राजनीति वाळा आपरै कौल नै रत्तीभर ई नीं निभायौ अर अेक लोककल्याणकारी राज्य री थरपणा करण री बात नाराबाजी सुधी सिमटनै रैयगी। अलबत इण दौर में समाज में भण्या-पढ्या तबका री तादाद ठीक-ठीक बधी अर कविता सुणबा वाळा लोगां री ठौड़ कविता रा पाठक बेसक बध्या। इण बात नै ध्यान में राखनै विचार करां तौ अेक चीज चोखी भांत सूं सावळ दीखै कै मोटी संख्या में पाठकां सुधी पूगण रै खातर इज उस्ताद हिन्दी में कविता लिखण री तेवड़ी। वांरी हिन्दी कवितावां 'आग' संग्रै में सामिल है जिण रा कुल चार खंड है। पैला खंड 'चिंतन' में पांच कवितावां है, जिण में कवि आजादी रा मोल री पिछाण अर बखाण करै; आजादी हासिल होवण री बात रौ संतोख परगट करै; मिनख मन री मंसावां अर सामरथ नै उजागर करै अर जीवन में लगातार संघर्स री जरूत नै बतावै—

नैतिक मूल्य तेरे निर्णित हैं
शत्रु, मित्र सबसे परिचित हैं
अब तू वही मार्ग ले साथी
जिधर प्रगति सामाजिक हित है
पथ चलते रहना मंगल है
घाव लगे कलरव निर्बल है
तब तुमको अमि सखे गरल है

(आग, पेज 15)

दूजै खंड 'अनुभूति' में सात कवितावां है जिणमें कवि लोकतंत्र री तागत नै उजागर करण रै साथै-साथै तकनीक रै उपयोग री हिमायत करतौ निगै आवै अर जूण री जटिलतावां नै अरथावण री कोसिस करै। तीजा खंड 'आह्वान' री सात कवितावां में कमोबेस आपांनै अेक जनतांत्रिक कवि री समाजू प्रतिबद्धतावां री झलक मिलै। अठै आपां अेक मुलायम कविता भासा नै देख सकां जिकी उस्ताद री राजस्थानी कविता सूं न्यारी है—

प्रगत जीवन की सदा ही जीत है
सजग जब तक ये तुम्हारे हाथ हैं
प्रगट, प्रेरक, स्वस्थ श्रम का गीत है
अमरता मानव तुम्हारे साथ है
पुष्प क्यों तब मृत्यु पथ में बो रहे हो?
दीप क्यों तुम जी रहे हो?

(आग, पेज : 52)

चौथा खंड रौ नांव ई 'आग' अज है, जिणमें दस कवितावां भेळी है, जिणमें कवि जूंण री विडरूपतावां नै उजागर करतौ थकौ हालात में बुनियादी बदळाव री जरूत माथै भार देवै अर जड़ता नै तोड़ण वास्तै जनता री अेकजुट तागत रै पांण लगोलग संघर्स री बात करै क्यूंकै

आजादी तौ अेक पड़ाव इज हौ पण छेकड़ली मंजिल तौ हाल ही पूगणौ बाकी इज है अर आ मंजिल है— हरेक मिनख रै जीवण में आमूल-चूल बदळाव लावण री। अेक कविता में उस्ताद लिखै—

रहने दे सखि दीप
विश्व के युग-जीवन में आग बहुत है
जगती के पाषाण हृदय में
त्याग नहीं सखि, राग बहुत है
रवि किरणों में अंधेरा है
कौशल में यम का डेरा है
जन-गण के प्रताड़ित मन को
श्रम शोषक अहि ने घेरा है
पौरुष के पथरीले पथ में
धन के विषधर नाग बहुत हैं।

(आग, पेज : 36)

उस्ताद री हिंदी कवितावां उणां री राजस्थानी कवितावां रै मुकाबलै भलैई कमती संख्या में है, पण इण सूं आपां नै केईक दिलचस्प तुलनात्मक निष्कर्ष माथै पूगण रौ मौकौ जरूर मिलै। उस्ताद राजस्थानी कविता री भासा अर सबदावळी नै ठेठ लोक रै नजीक लेयनै जावै अर बठै सूं अणगिणत कैवतां अर मुहावरां रौ उपयोग करै अर व्यंग्य अर ओळमा रौ अठै खासौ जोरदार अर असरकारी सुर मौजूद है, अर आपरै मूळ सुभाव में उणरी राजस्थानी कविता तारकिकता माथै आधारित है, जिणमें अनुभूति अर संवेदना रौ समन्वय मौजूद है, अर आ भासा समाज रै छेकड़लै खूणै बैठा मामूली मिनख री भासा सूं न्यारी नीं है। सामाजिक चेतना अर बदळाव रै खातिर उस्ताद लोगां रै हिया सुधी पूगणी चावै अर इण वास्तै इज उणां गीतां रै माध्यम सूं जनता नै जोड़ी। स्यात औ इज कारण व्है सकै कै काव्य-सिल्प सूं जादा जोर उस्ताद काव्य री संप्रेषणीयता माथै देवै। जीवंत प्रतीकात्मक काव्य-शैली वाळी इण कविता में तरक अर चुनौती, व्यंग्य अर आक्रमण रै साथै जन-आह्वान इत्याद अेक दूजा सूं अेकमेक व्हेयनै आपरै संस्लिस्ट तेवर नै उजागर करै।

कविता री पारंपरिक मुलायम भासा अर काव्य-सबदावळी सूं अळघा रैयनै उस्ताद राजस्थानी कविता में उण ठोस अर परिवेस सूं जुड़ी थकी भासा रौ उपयोग कर्‌यौ है, जिकी चूकती मिनख-विरोधी तागतां अर प्रवृत्तियां रै सांम्ही खासै जोरदार ढंग सूं आपरौ सिरजणात्मक विरोध दरज करै। उस्ताद काव्यभासा री तमाम खूबियां अर सामरथ नै काम लेवतां अेक इसी भासा नै संभव करण रा जतन करिया है जिणमें भाव, संवेदन अर अनुभव मुजब सबदां रौ उपयोग मौजूद है। कवि रा सबद ठीक उण बात नै इज परगट करै जिणनै कवि असल में कैवणौ चावै। उस्ताद री राजस्थानी कविता सामान्य जन री काव्यवस्तु नै, सामान्य मिनख री भासा में असरकारी ढंग सूं पेस करण वाळी कविता री नजीर बणनै उजागर व्है।

कविता री अंतर वस्तु में आवण वाळै बदळाव अर समाजू परिवेस री रंगत में होवण वाळै परिवरतन रै साथै उस्ताद री काव्य भासा में ई बदळाव आयौ अर वै हिन्दी में कवितावां लिखण लाग्या। पण उस्ताद री हिन्दी कविता आपरै आंतरिक प्रवाह अर टोन री दीठ सूं पक्कायत रूप सूं उत्ती असरकारी अर समरथ नीं है जित्ती उणां री राजस्थानी कविता है। उणां री हिन्दी कविता में ठंडौ सुर है, सांकेतिकता है अर आपरै मंतव्य नै सुझाव रै ढाळै लोगां रै हियै ढुकावण री कोसिस है, जदकै दूजी कांनी उणां री राजस्थानी कविता में सवालां री लड़ी, आक्रामक तेवर, व्यंग्य री तीखीधार अर तारकिकता रै पाण आपरी बात नै समझावण री बेचैनी हरेक ठौड़ मौजूद है— कम या बेसी तादाद में— पण अवस करनै है जरूर। उस्ताद हिंदी कविता में पढ्या-लिख्या पाठकां सूं रूबरू व्है अर राजस्थानी कविता में अणपढ्या लोगां सूं। जिकौ ताप अर आब उणां री राजस्थानी कविता में है, वौ हिंदी री कवितावां में मौजूद नीं है।

उस्ताद री हिंदी कविता, अेक कवि रै तौर माथै, उणां री गुणवत्ता में स्यात इज कोई बधापौ करती निगै आवै, अर हिंदी में कविता उणां आपरै मंतव्य अर काव्यवस्तु नै व्यापक जनसमुदाय सुधी पुगावण रै वासतै इज लिखी है अर आ बात बेसक कैयी जाय सकै कै उस्ताद आपरी राजस्थानी कविता रै बूतै इज समकालीन कविता रा महताऊ, जरूरी अर उल्लेखजोग कवि बणै, क्यूंकै राजस्थानी काव्य-भासा नै उणां नुंवी ओप, भंगिमा अर तेवर देयनै उणरी संभावनासील सामरथ नै उजागर करण रौ काम करियौ। काव्य-भासा री तारकिकता नै अलंकारिकता सूं अलग करनै इज समझी जाय सकै अर उसताद री राजस्थानी अर हिंदी कविता माथै आ इज बात लागू व्है। विजयदान देथा री टीप अठै वाजिब दीखै जिकी 'हमारा उस्ताद' में मौजूद है—

'कविता वाक्यों से नहीं, शब्दों से निर्मित होती है। और शब्द भी ऐसे बेजोड़ कि मूल-भाषा में भी उनका दूसरा विकल्प या पर्याय नहीं खोजा जा सकता, इसलिए कविता का अनुवाद लगभग असंभव है। काव्यभाषा को श्रेष्ठ हाथों से अेक बार जो स्वरूप मिल जाता है, उसे लाख विस्तृत टीकाओं द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। और उस्ताद ने ऐसी ही काव्यभाषा राजस्थानी का निर्माण किया है। हिंदी, उर्दू व अंग्रेजी में इतनी ऊंची उड़ान नहीं भरी जा सकी और इसी विशेष गुण की खातिर ही मातृभाषाओं का औचित्य है।'

(पेज 26)

❖❖

40 / 1214, टेकरी
उदयपुर (राज.)

● *कहाणी*

लाडेसर

उम्मेद धानिया

जद सूं रुकमणी री कूख मंडी है, तद सूं रुगौ मोद मांय मावै ई कोनी। वींरी खुसी रौ नेप ई नीं लाध रैयौ। वौ रुकमणी उपरां इब हर बखत नेह री बिरखा-सी करयां राखै। वा मन-ई-मन आपरौ भाग सरावै कै वींरी लारलै भौ मांय घणी चोखा करम करियोड़ी ही, जिणरै कारणै ई उणनै अैड़ौ भरतार मिल्यौ है। अर जदै ई भगवान वींरी आ सुणी है।

रुगै सांपड़तै आपरी आंख्यां सूं इण दुनियादारी नै देखी अर भोगी है। उण देख्या है, इण दुनिया रा मेळ-मुलाहिजा अर वांरौ सुवारथी व्यवहार। सैंग वींनै बांझड़ौ अर कुदरसणौ कैवण मांय पाछ नीं छोडी। और तौ और सागी मां-जाया भाई मुंडै उपरां तौ कीं नीं कैवता पण पूठ पाछै तौ वींरा सूण माड़ा ई मानता।

दिनूंगै पैली मिल जावतौ तौ जद जाणै वांरै माथै हांडी ई फूट जावती। वौ गांव रै ठोसा अर मीणां सूं अधगैलौ-सो रैवतौ, तौ वींरी जोड़ायत घणै काचै काळजै री ही। वा लुगायां रा मीणा अर बात-बात माथै बांझड़ी कैवणौ सैन नीं करती अर घरै आयनै ढांढा रोवण ढूक जावती। वा तौ संकावती थकी कदैई किणी रौ टाबर ई गोदी में लेयनै कोनी रमावती। हरेक बखत आपरै भाग नै रोवती।

रुगौ आपरी पीड़ पंपोळता थकां सदा वींनै धीजौ बंधावतौ कै जे आपणै करमड़ै मांय गीगला लिख्योड़ा है, तौ जरूर आपणै घरां नेनकड़ै टाबरां री किलकारियां गूंजसी। जरूर आपणै करमां कारी लागसी। थूं मन छोटौ मत कर, वीं रै घरां देर है, अंधेर कोनी। भगवान अेक दिन जरूर आपणी सुणसी।

सुणीली वींरी भगवान। रुगा री आस रंग लाई। पूरा इग्यारा बरसां पछै रुकमणी रौ पेट मंड्यौ तौ घर रौ कूणौ-कूणौ बाखळ, बटोड़ा अर पळींडा तकांत हरया हुयनै उण नुंवै पांवणै साय पलक-पांवडा बिछाय दिया।

रुगौ सगळै दिन अठी सूं वठी अर वठी सूं अठी उछळतौ अर मुळकतौ फिरै, जाणै ब्याव में बिनायकियौ फिरतौ हुवै। उण दूजौ महिनौ लागतां ई गांव री नर्स सूं टीकै रै साथै-साथै

सै कागद-पानड़ा बणवाय लीना ताकै गरभ में पळतै नानकै रै किणी भांत री अबखायी नीं हुय जावै। हर पंदरवै दिन स्हैर जायनै रुकमणी री जांचां करायनै लावै।

वा जे भारी काम करती दीखै तौ फट दाणी रौ भाज'र संभाळ लेवै। उणनै कैवै कै थूं आराम कर, क्यांनै पलभेड़ा लेवै, कोई खोड़ हुय जासी। सगळौ काम म्हैं आपौ-आप ई कर लेस्यूं। थनै कीं करणै री जरूत कोनी।

वीं री अैड़ी बातां सुणनै वा मुळक'र रैय जावै अर मसखरी करती थकी कैवै, जे म्हैं कीं नीं करस्यूं तौ टींगर कै टींगरी आळसी जलमसी अर थांनै न्याल कोनी करैला।

वींनै काम करणै री कांई जरूरत है, काम म्हैं अेकलौ घणौई कर लेस्यूं। वौ तौ स्कूल जायनै घणौ पढसी अर पढनै कोई मोटौ अफसर बणसी अर वीं रै पांण आपां मौज करस्यां।

—नांव कांई धरस्यौ? रुकमणी छेड़-सी करती थकी मुळकनै पूछ्यौ।

—प्रमोद! रुगै पडूत्तर दीनौ

—प्रमोद ई क्यूं?

—क्यूंकै औ नांव छोरौ अर छोरी, दोन्यां रौ हुय सकै।

—जे छोरी हुयगी तो?

—पछै कांई है तौ... ? वीं ई घर री छोरी अर वीं ई घर रौ छोरौ। छौरै-छोरी मांय कांई फरक? 'छोरी घर रौ बोझ हुवै, छोरी नै जाम'र जलम हारणौ हुवै।' अै तौ इण पुरुसप्रधान देस रा मिनखां री ओछी मानसिकता रा चोंचला है। छोरी ई छोरै सूं किणी मामलै में कमती कोनी।

—तौ पछै आपणै छोरी ई हुवसी।

—घणी आछी बात है तौ...।

अैड़ी हंसी-मसखरी अर गाढै हुवतै प्रेम मांय दिन-महिना नीसरण लाग्या। छेकड़ अेक दिन वौ ई आयग्यौ जद रुगा रै घरां थाळी री झणकार गूंजी अर वीं रै घरां गीगलौ आयग्यौ। पूरौ पाठौ, सोनै बरणौ डील, मोटी-मोटी आंख्यां। हाथ डोई-सा तौ पग मोगरिया-सा। मुळकै जद गालां ऊपरला डिम्पल वींनै और ई रूपाळौ बणावै। फूटरौ इत्तौ कै जाणै भगवान वींनै घड़तां-घड़तां इग्यारै बरस लगाय दीना।

पैलांपोत घरां वींरी किलकारी गूंजी तौ रुगै नै लाग्यौ जाणै वीं रै ऊपरां देवता फूल बरसाय रैया है। जाणै घर रौ कूणौ-कूणौ सजीव हुयनै वींनै बधाई देवै। उणनै लाग रैयौ है जाणै आखै संसार री खुसी चाणचकै ई वीं रै आंगणै-पगाणै आय पड़ी। अर उणसूं संभाळी नीं जाय रैयी है। बारंबार भगवान नै धन्यवाद देवतौ थाकै ई कोनी। मन ई मन मोद मांय सोचै कै इण सुवारथी जुग अर समाज में साच्याणी वौ अबै रळ्यौ है। असल में मिनखां मांय बैठण जोगौ वौ अबै हुयौ है। क्यूंकै अबै वौ बांझड़ौ कोनी, वौ ई अबै बेटै रौ बाप है।

अबै वौ ई गांव रा पंच फैसलां मांय सामिल हुय सकै अर ठरकै सूं आपरी बात राख सकै। अठीनै रुकमणी तौ खुसी में जाणै आपरी सुध-बुध ई गमाय दी। हरेक बखत आपरै गीगलै नै छाती सूं चेप्यां राखै। अेक पल ई अेकलौ नीं छोडै।

दोनूं धणी-धणियाणी घणै मोद में जीवै। घर में खुसी रौ थाग ई नीं लाध रैयौ। आपरौ घर दोन्यां नै सुरग जैड़ौ लागै, जठै देवता रमै। रुकमणी तौ आपरी ममताळू छतरी लाडेसर पर

अस्टपौर ताण्यां राखै। काळजै रै उण टुकड़ै नै हिचकी ई आय जावै तौ मायड़ री सांस उखड़ जावै। छींक आय जावै तौ घ्यारी मंड जावै अर वा चेताचूक-सी हुयनै देवी-देवता सिंवरण लाग जावै। छाती सूं चेपनै थपेड़ै अर कैवै कै कांई हुयौ म्हारै लाल नै आज छींक कीकर आयगी? जुकाम-झरड़ौ तौ नीं हुयग्यौ है? वा तावळी-सीक रुगै नै हेलौ मारै तौ वौ तुरंत आयनै वीं रै हाथ री नाड़ी देखै। छाती रै हाथ लगायनै देखै, वींरी मोटी-मोटी आंख्यां कांनी निगै करै अर पछै मुळकनै कैवै— कीं नीं हुयौ आपणै लाल रै। थूं नचीती रैव भलांई। आ छींक तौ जीव सोरै री है। पण मायड़ रौ जीव नीं धापै। वीं रै मन मांय तालामेली-सी लाग जावै। अर वींनै पोतड़िया मांय लपेटनै गांव रै डाक्टर कनै भाजनै जावै। डाक्टर वींनै देखै, नैनी-मोटी जांच करनै मुळकै अर पै कैवै— जीव मत उठावौ थांरौ, टाबर अेकदम भलौ-चंगौ है। थांनै फकत बैम हुयग्यौ अर बैम री दवाई म्हारै कनै कोनी।

इणी ताला-मेली, लाडां-कोडां, हंसी-खुसी सौरफ सूं दिन नीसरण लागा। पछै वांरै काळजै री कोर प्रमोद स्कूल जावण लाग्यौ। पण विधी रौ विधान आपरै बहीखातै मांय, स्यात वीं रै जलम लेवतां ई रुगै अर रुकमणी रा दिन खोटा लिख दिया हा। वै सोच ई नीं सकता कै वांरी आ खुसी फकत थोड़ा'क दिनां री है। कीं दिनां पछै वांरी खुसी रै ग्रैण लागण वाळौ है। अैड़ौ ग्रैण जिकौ आखी उमर वांरौ लारौ नीं छोडैला। जद प्रमोद पैलीपोत पेट में दरद री सिकायत करी। डाक्टरां नै दिखायौ, दवाई दिराई, पण कीं स्यारौ नीं लागौ। वौ दरद में बियां ई कुरळावै, नीं रात में नींद आवै अर नीं दिन में झक पड़ै।

वींरी मां उणनै छाती रै लगायनै घणी ई पीड़ पंपोळै, पण पीड़ नै पंपोळणै सूं दरद कमती नीं व्है जावै। रुगो ओजूं सफाखाना मांय ले पूग्यौ।

अबकाळै डाक्टर वींनै अेक जांच लिखनै दीनी। जांच करायनै पाछौ आयौ अर डाक्टर नै रिपोट दिखाई। जांच देखतां ई डाक्टर रै मूंडै री रंगत बदळगी।

उण पैलपोत प्रमोद कांनी देख्यौ, पछै रुगै कांनी देख्यौ, जिकौ फकत डाक्टर कांनी ई होवै हौ।

—रुगारामजी! कित्ता टाबर है थांरै? डाक्टर रुगै कानी देखता थकां पूछ्यौ।

—टाबर तौ साब आपरै सांम्ही ऊभौ है, औ अेक इज है। अर औ ई म्हारै ब्याव रै पूरै इग्यारा साल पछै हुयौ है। घणी जेज पछै भगवान म्हारै उपरां मेहर कीनी।

—तौ... और विचार कोनी कांई?''

—ना जी, आ ई मालिक कांई ठाह कीकर सुण लीनी। म्हैं तौ आस ई छोड दीनी ही। पण आप अैड़ी बातां क्यांकै तांई पूछ रैया हौ?

डाक्टर भळै प्रमोद कांनी देख्यौ अर पछै उपरां देखनै बोल्यौ— माटौ टाबरियौ तौ घणौ फूटरौ है, पण...।''

—पण कांई डाक्टर साब...? इयां कियां बात करौ...। रुगै नै चिंता-सी हुवण लागी।

—कियां बताऊं तौ म्हैं थांनै...?'' डाक्टर सोच मांय पड़ता थकां बोल्या।

—इसी कांई अबखाई है जिकौ थे बताय कोनी सकौ। थांरी समझ में नीं आवै तौ म्हैं इणनै जयपुर कै बीकानेर दिखावां।''

—कठैई ले जावौ भलाईं।

—छेकड़ डाक्टर साब थे कैवणी कांई चावौ? रुगौ चिंता रै साथै आखतौ-सो होयनै पूछ्यौ।

—करड़ी छाती करौ रुगाराम अर दुख नै पळोटण री सगती बपरावौ।''

चाणचकै ई अैड़ी बात सुणनै रुगा रै पगां मांय सरणाटौ बापरगौ अर वींरा रूंगटा ऊभा हुयग्या। वौ डाक्टर रौ मूंडौ तकतौ-सो बोल्यौ— कैड़ै दुख री बात करौ थे?

डाक्टर रुगा रै अेक कान कनै-सीक मूंडौ कर बोल्या— इणरै गुड़दा मांय कैंसर हुवण रै साथौसाथ दोनूं गुड़दा फेल हुवण वाळा है अर औ थोड़ा'क दिनां रौ पांवणौ है, आ बात म्हनै घणै दुख रै साथै कैवणी पड़ रैयी है। पण कांई करां, होणी बळवान है, वै आपरै बळ चलावै।

इत्ती सुणतां ई रुगै रै माथै में तौ जाणै बम रौ खुड़कौ-सो हुयग्यौ। वींरौ सिर चकरावण लाग्यौ। वींनै धरती हिलती-सी लखाई अर उणनै चक्कर रै साथै-साथै अंधेरी आवण लागी अर वौ उठैई आपरौ माथौ पकड़नै बैठग्यौ। वींरी आंख्यां सूं चौसरा आपौ-आप ई चालण लाग्या।

प्रमोद आपरी जबरी अबखाई सूं जाबक अणजाण आपरै पापा री मनगत नीं समझ सक्यौ। पापा चाणचकै ई यूं कीकर बैठग्या? वौ वांरा दोनूं हाथ पकड़नै माथै सूं हटाया अर मासूम-सो सवाल कियौ— पापा, थे रोवौ क्यूं हौ? थांरै कांई हुयौ? कांई थांरौ ई म्हारै ज्यूं पेट दुखण लागग्यौ? डाक्टर जी सूं गोळी लेल्यौ, ठीक हुय जावोला। म्हैं तौ आ गोळी लेवूं। देखौ, म्हारौ पेट दुखणौ ई कमती होयग्यौ। वौ कुड़तियौ ऊंचौ करनै पेट बतायौ।

लाडेसर री बात सुणनै वीं उणरै कानी देख्यौ अर वीं रै गालां उपरां आपरा दोन्यूं हाथ मेलनै बोल्यौ— हां बेटा! थारौ दरद कमती हुयग्यौ तौ पछै म्हारौ ई हुयग्यौ। चाल, आपणै घरां चालस्यां।

आथण तांई दोनूं बाप-बेटा घरै आयग्या। रुकमणी सांम्ही इज आय लीनी। रुगौ गेलै में सोचतौ-सोचतौ अधमर्‌यौ हुय रैयौ हौ कै वौ रुकमणी नै आ बात कीकर बतावैला? जे उणनै साच बताय दियौ तौ वा तौ जींवती इज ल्हास हुय जावैला। मन ई मन उण करड़ी छाती कर लीनी कै वौ रुकमणी नै आ बात नीं बतावैला कै वींरा लाल रै कैंसर हुयग्यौ। वीं रै सांम्ही वौ झूठ ई बोलसी... पण चाणचकै वींरौ काळजौ कंठां में आय जावै कै औ झूठ कद तांई लुक्योड़ौ रैयसी...? साच तौ अेक दिन उघड़णौ ई है। वींनै कांई ठाह क्यूं आपरौ घर उजड़तौ-सो दीख्यौ। वींरी घरवाळी बावळी-सी हुयोड़ी दीखी अर वींरौ लाडेसर जाणै सूखनै खेलरियौ हुयोड़ौ पीड़ में कुरळावतौ-सो दीख्यौ।

रुकमणी रै सांम्ही जावतां ईं वीं रै डील में सुन्न-सी बापरगी। घरां पूगतां ईं रुकमणी प्रमोद नै छाती सूं चेप लियौ। आपरै पल्लू सूं वीं रै मूंडै पसीनौ पूंछता थका माथौ चूमनै मुळकती थकी बोली— आयग्यौ म्हारौ बचियौ।

रुगौ वीं रै कानी देखै अर मन ई मन कोई बात घड़ै कै वींनै किसी अबखाई बतावूं जिण सूं इणरौ जीव ठिकाणै आवै।

—कांई अबखाई बताई है... ? रुकमणी प्रमोद नै छाती सूं चेप्यां-चेप्यां ई रुगै नै पूछ्यौ।

—ना, कोई खास अबखाई कोनी। यूं इज खावणौ-पीवणौ सदियौ कोनी। जिणसूं आंत में हळकी-सीक सूजन आयगी। पण आं दवायां सूं ठीक हुय जासी। घणी चिंता री बात कोनी।

—चिंता री बात कीकर कोनी! छोरै नै दुख पावतां आज दस दिन हुयग्या। इण कानी देखतां-देखतां म्हारी तौ भूख ई बंद हुयगी। रात रा नींद ई कोनी आवै। औ अेक ई तौ फोवौ है, औ ई ठीक नीं रैवैला तौ आपां पछै क्यांरै लागस्यां ? इणरै कीं हुय जावै तौ म्हनै घड़ी-भर ई झक नीं पड़ै।

रुगौ सोचै, जीवड़ा, आ अबार ई यूं करै तौ साच रौ पतौ लागसी तद कांई हुवसी। कियां दुख स्हैन करसी ? भगवान आपणै साथै ई अैड़ी माड़ी क्यूं कीनी। दुनिया तौ और ई घणी ठाडी पड़ी है।

दिन निकळण लागा तौ वा बीमारी ई आपरौ असर दिखावणौ सरू कर दियौ। दिनौदिन प्रमोद कमजोर हुवतौ साव तकतुळियौ-सो हुयग्यौ। रंग काळौ पड़ग्यौ तौ चालतै नै चक्कर ई आवण लाग्या। मुंडौ पिचकनै किणी डोकरै जैड़ौ लागण लाग्यौ तौ माथै रा सगळा बाळ ई उडग्या। आंख्यां, जिकी वीं रै फूटरापै रै चार चांद लगावै ही, वै अबै बारै निकळनै घणी डरावणी-सी लागण लागी। इण रै साथौसाथ हाथां-पगां रै सोजौ आयग्यौ।

बास-गुवाड़ रा घणकरा लोगां नै ठाह पड़गी ही कै रुगा रौ अेकलड़ौ लाडेसर अबै घणा दिन नीं काढै। फकत थोड़ा'क दिनां रौ ई है। गांव-गळी रा सगळा लोग वीं रौ हाल-चाल पूछण नै आवै। छेकड़ रुकमणी नै पतौ तौ लागणौ ई हौ। वा घणी ई रोवै-कूकै अर कळपै अर बार-बार कैवती सुणीजै कै, अरे रामजी! म्हारै साथै थांरौ कांई बैर हौ रे... ? अैड़ी ई करणी ही तौ पछै क्यूं दियौ म्हांनै औ रमतियौ ? क्यूं बिलमाया म्हांनै ? क्यूं म्हारै तूटतै सपनै रै काची पीख लगाई ? इण सूं तौ म्हैं बांझड़ा ई ठीक हा। सुण लेवता आखी उमर इण समाज अर गांव-गळी रा मीणा अर वांरी गाळियां। छाती मांय गडता वांरा बोल। पण इण दुख नै पळोटण री सगती म्हैं कठै सूं ल्यावां ?

प्रमोद री पीड़ दिनौदिन बधती जावै ही। गोळी अर दवाई खायां उणरी गैळ में घड़ी-भर झक ले लेवै पण दवा रौ नसौ उतरतां ई पाछा वै ई तोड़ा-फोड़ा, वौ ई कुरळावणौ अर घड़ी-घड़ी चिराळी मारनै मा-बाप नै पुकारणौ— ओ रे मावड़ी, मरग्यौ अे... अरे पापा, म्हारै पेट में बळत लाग रैयी है रे... ओय रे मां, म्हारी पीड़ कमती कोनी व्है रे...।

रुगौ अर रुकमणी तौ उण कांनी देख-देखनै रोवता थका अधमरग्या इज हुयग्या। वांरौ तौ खाणौ-पीणौ ई छूटग्यौ। रुकमणी कदैई वींनै छाती सूं चेपै तौ कदैई आंचळ में लुकोवै पण वींरी मांयली पीड़ वा कीकर ठीक करै। जद सगळा देवी-देवता हाथ खड़ा कर देवै, भगवान बैरी बण जावै, तौ पछै डाक्टर बापड़ा कुणसी दुनिया सूं आयोड़ा हुवै, जिकौ ठीक कर देवै।

आथण रा सोवण री बेळा ही। अंधारै पख री काळी रात, फकत तारा ई टिमटिमावता हा, तौ गांव री सूनी गळियां में गंडक भुंसता सुणीजता। गांव में लगैटगै सोपौ पड़ग्यौ हौ। रुकमणी अर रुगा री मचलियां बिचाळै प्रमोद री मचली ही। वौ सूतौ हौ, पण नींद नीं आई ही। आज वौ कीं ठीक निंगै आवै हौ। मूंडै उपरां कीं चैचाटी बापरचोड़ी लागै ही अर बंतळ ई यूं करै हौ, जाणै वौ साचाणी ठीक हुय रैयौ है। उण सूतां-सूतां ई कैयौ— मां...।

वीं री मां चाणचकै ई उछळ-सी पड़ी, क्यूंकै उण घणै दिनां पछै आपरी मां नै सोराई सूं बतळाई अर वा ऊठ'र बैठी व्हैगी। वींरा बाळां में हाथ फेरती थकी पूछ्यौ— हां, बेटा!

—मां, म्हनै आज ओजूं भूख लागगी।

—चोखी बात ई है बेटा, लै म्हारै चिड़ियै नै अबार रोटी लाय देवूं। वा फुरती सूं ऊठ'र रसोई में जावै अर दूध में रोटी चूरनै लाय देवै।

वौ रोटी जीमतौ-जीमतौ ई पूछै— पापा, आज म्हनै ओजूं भूख क्यूं लागगी?

—कमती खाई हुसी बेटा, अबै धापनै खायलै। वीं रा पापा कैयौ।

वौ रोटी जीमतौ रैयौ अर साथै-साथै कदैई मां कानी तौ कदैई पापा कानी देखतौ रैवै... खासी ताळ पछै वौ घणी मासूमियत सूं बोलै— पापा, थे मां साथै कदैई लड़ियौ ना...।

वीं री अैड़ी बात सुणनै रुगौ घणै अचरज सूं वीं रै कानी देखै अर कैवै— ना बेटा! म्हैं कदैई लड़िया ई कोनी।

रुकमणी ओजूं बैठी हुयगी अर आपरै बेटै कानी जोवती थकी बोली— थूं आज बेटा यूं कीकर बात करै? थारै दरद बेसी तौ नीं है? कै गोळियां री गैळ चढ रैयी है?

वौ कीं नीं बोल्यौ अर टुकर-टुकर आपरी मां कानी देखण लाग्यौ।

चाणचकै ई पेट में घणौ जोर रौ दरद उठ्यौ तौ वौ चिरळायनै आपरी मां री छाती सूं चिपग्यौ... अर उण चिप्यां-चिप्यां ई कैयौ— मां, म्हनै लुकोयलै। म्हनै डर लागै।

रुकमणी उणनै काठौ छाती सूं चेप लियौ। वींरी आंख्यां सूं आंसू बैवण लागा। वा रोवती-रोवती ई कैवै— ना बेटा! थूं डर मत, म्हां थारै कनै ई हां। अै देख थारा पापा थारै कनै है।

रुगौ तौ वींरी अैड़ी गत देखनै भाठौ हुयग्यौ। मुंडै सूं बोल नीं फूटै।

वौ ओजूं चाणचकै चिरळायौ— मां, मां...मावड़ी... पापा... पापा... म्हैं कठै जाऊं? म्हनै कुण लेय जावै...? अै देख, छुडा म्हारी मां म्हनै... अै लेय जावै...। कैयनै वौ सांत हुयग्यौ। वींरा हाड-गोडा ढीला पड़ग्या अर आंख्यां झपकणी बंद हुयगी।

रुकमणी नै समझतां जेज नीं लागी। ढळती रात में उणरै मूंडै सूं काळजौ चीरती-चीसळी निकळी, जिकी ठंडी रात मांय आखै गांव नै जगाय दियौ। क्यूंकै वींरौ लाडेसर अबै इण दुनिया में नीं रैयौ हौ।

❖❖

गांव-राजपुरा, वाया-दूधवाखारा
जिला-चूरू (राज.) 331029
मो. 9571143056

राजू सारसर 'राज'

छाती माथै भाटौ क्यूं है?

जाणूं अठै सरणाटौ क्यूं है,
छाती माथलो भाटौ क्यूं है।
भीड़ नीं मावै सड़कां माथै,
मिनखां रो पण घाटौ क्यूं है।
घिन री बही में बट्टा नीं है,
हेत रै खातै ओ काटौ क्यूं है।
कमाऊ बळद भूखा खड़्या,
फंडर खोलां नै चाटौ क्यूं है।
कूड़-कपट नै छूट मोकळी,
सांच रै मुंडागै पाटौ क्यूं है।
जिका करै नीं राज खोरसौ,
बां रै सुखां रौ लाटौ क्यूं है।

❖❖

सोयां अबै सरै नीं

ताण, सांम्ही छाती ताण!
ऊभौ हौ मजूर किरसाण।
बूझा मती अै दीवा साथी,
घणमोला है थारा पिराण।
दे गाबड़ में हक खोसलै,
निज री तागत ले पिछाण।
लीलड़्यां सूं पार पड़ै नीं,
मचा अबै तौ थूं घमसाण।
हाकम सूत्यौ घोर नींद में,
थारी कबरां चादर ताण।
करनै हाकौ धरती धूजा,
जदैई रेवैलौ साथी मांण।
सइकां सूं सता री रीतां,
करती आई लोहीझ्यांण।
मरणौ धारै लड़नै मरजै,
बिरथा मति खोवै पिराण।
सोयां अबै सरै नीं साथी,
जाग रै मजूर किरसाण।

❖❖

इंकलाब री आस में

आंसू नीं आंख में अंगार राखजै,
हाय नीं हिवड़ै में हुंकार राखजै।
लूंठौड़ां सूं राड़ रौ है औ कायदौ,
खांधां माथै थूं घरबार राखजै।
नाच्यौ जिण खेत बठै मौत हांसै,
देणौ पड़ैलौ माथौ त्यार राखजै।
टाबर भूखा सोवै को मींणौ कठै,
टाळवौं औ तौ इधकार राखजै।
बिछण ना दे मान मर मार दीजै,
हाथ कोई अैड़ौ हथियार राखजै।
इंकलाब री आँधी चावै झुलाणी,
करम नै खुद रो दातार राखजै।

❖❖

बोल चिड़कली बोल

लिखतां लिखतां लिखीजगी,
बातां कीं राती-माती,
ता सुन्दरी सांच कैवूं,
लंपटां रै गेलां चाल पड़ी,
पांच बरसां पछै ऊगै,
फसलां नित नवला नारां री,
आवै आ वेळा अेकर ई,
मीठी-मीठी मनवारां री,
अेक दांण रो राजा है थूं,
पछै भाग में भटका है,
लुळताई फगत थारै लिखी,
अै लोकतंतर रा लटका है,
मुंड हला बै चावै ज्यूं,
मूंडौ खोलण री मनाही है,
पगरखी सोभा पग री हुवै,
आ ठौड़ सदा सूं ठावी है,
बोल चिड़कली बोल देख,
बोल पण हुसी थारा अपघाती,
लिखतां-लिखतां लिखीजगी,
बातां कीं राती-माती।

❖❖

रात बावळी

रात कद मानैं निज रो रात हौवणौ
जदैई राखै बुगचै में ल्हुकोय'र,
लप-भर तारा अर निबळौ स्सौ चांद,
सूरज रै सैंजोड़ सूरज
पण
सूरज ई होवै
आ बात क्यूं भूलै रात बावळी।

❖❖

भींत

घर है,
घर रै चौगड़दै भींत है
भींत घर रौ रूप घर रौ पड़दौ ई है,
भींता बिचाळै ऊभौ है मिनख
मन में अलेखूं भींतां लियां
भींत कुणसी भली मिनखां सारू?

❖❖

लोकराज

रैयत रै रेवड़ नै
लीलीछम दूब रा सुपनां दिखाय'र
मौर ई लेवै पाकै सीटां ज्यूं,
पछै बूझै कद है जात,
जनसेवग अतरा फीटा क्यूं,
लोकराज में सत्ता री
रोट्यां सेकण सारू,
लोकलाज फगत बळीतौ है,
सीटौ सिक्यां पछै,
जदैई तौ नेतौ नचीतौ है।

❖❖

राड़

बोलौ,
खुल'र बोलौ
भींतां कोनी सुणै
भींतां अळुझ्योड़ी है
आपसरी री राड़ में
बांदरा बंटाई में।

❖❖

ठिकाणौ : मु.पोस्ट-किशनपुरा (दिखणादौ)
हनुमानगढ़ (राज) 335513
कानाबाती : 9982858383, 9587100376

● *व्यंग्य*

राजनेतावां रौ रासिफळ

शंकरसिंह राजपुरोहित

मेष : कित्ता ई कांसा तोल दिया, जनता झांसा में आवणी दोरी है। तीजै भाव रौ मंगळ दुखदायी है। कोई पारटी रौ टिगट मिलणौ मुस्कल है। टिगट री मांग करोला, पण खुद रा ई लोग टांग खींचैला। निरदळीय खड़ा होय'र तौ खुद री फजीती करावणी है। सांयती धारण में ई समझदारी है। क्रिसण नैं भजौ अर राधा नै याद करौ। हरि ओम!

वृष : कोई मोटौ जुगाड़ बैठा'र टिगट तौ कबाड़ सकौ पण चुणावी समीकरण कोनी बिगाड़ सकौ। विभीषण चुणाव मैदान में आंटौ काढैला, पण हार-जीत तौ होवती रैवै। 'करत-करत अभ्यास, जड़ मति होत सुजान'। ठोकर लाग्यां ई चेतौ हुवै। कीड़ीनगरौ सींच्यां सूं मन नै कीं शांति मिल सकै। नमो नारायण!

मिथुन : प्री अर रिटर्न दोनूं में पास, पण इंटरव्यू करड़ौ हुयौ है। इण वास्तै सूची जारी हुयां पैली खरचौ करणौ पईसा धूड़ में नाखणा है। जे प्रत्याशी-सूची में नाम आयग्यौ तौ पौबारा पच्चीस। हींग लागै न फिटकड़ी, रंग आसी चोखौ। पण सुभ समाचार में सनि आडौ आवै। सनि री सांति सारू मतदान सूं पैली गुप्तदान जरूरी है। हरे-हरे!

कर्क : तर्क ठीक है, पण बात में फर्क है। लूखी राजनीति सूं काम कोनी चालै। सुजोग कम अर कुजोग घणा है। सनि री साढी सति पगां माथै बैठी है। इण वास्तै घर-घर घूमणौ पड़सी। चुणाव सूं पैली राहू अर चुणाव रै पछै केतू री दसा रैसी। आं तीनूं करड़ा ग्रहां नै कंवळा करण सारू जेबां ढीली करणी पड़सी। जै श्रीकृष्णा!

सिंघ : हार-जीत हरि रै हाथ, पण चुणाव तौ लड़णो ई है। सिंघ हार मान लेवैला तौ जंगळ रौ राजा कुण कैवैला। अबै भागदौड़ कित्ती ई करौ पण सिकार तौ तीजै उम्मीदवार रै तांण ई होय सकै। पारटी आळा टिगट देवता डरसी, पण बाबौ भली करसी। उडतौ सिकार कर्‌यां केतु फोड़ा घाल सकै। जै जगदम्बे!

कन्या : ऊंधौ आरोप लगाय'र कोई कन्या छवि खराब कर सकै। अबार औ चाळो चाल्योड़ौ है। तिल रौ ताड़ बणतां टैम कोनी लागै। इण वास्तै चुणाव-चुणाव पूरी सावचेती राखौ। टिगट नीं मिळै तो शांति धारलौ। निरदळीय उम्मीदवार रै रूप में खड़्या हुयग्या तौ कोई कोनी बैठावैला। परचै रा फालतू पईसा लाग जावैला। ओम् शांति!

तुला : खुल्ला पईसा कनै राखौ। मिंदरां में जावौ जठै ई पुराणियै मतदान ज्यूं पेटी में नाखौ। चुणाव सूं पैली मिंदरां में ईंटा, पट्टियां अर सीमेंट रा कट्टा नखायां जनता भावना में बैय सकै। नईं जीतौ तौ सद्भावना सूं सगळी सामग्री पाछी उठवा लिया। टिट फोर टेट। आगलै चुणाव तांई वेट करौ तौ सफळता मिळ सकै। पण इत्तौ खटाव कठै? हे राम!

वृश्चिक : चुणाव में सफळता हासल करणी है तौ हाथीछाप बिच्छू बांटणा पड़सी। चुणाव अर ब्यांव बातां सूं कोनी नीवड़ै। भासण सूं भूख कोनी मिटै। भूखौ तौ धायां पतीजै। सनि आगै-लारै गेड़ा देवै, इण वास्तै भासण रै सागै काळा तिल अर रासण बांटणौ जरूरी है, जणै इज सासण में सीर मिल सकै। करम करता जावौ, फळ री चिंता मत करौ। राधे-गोविंद!

धन : चुणाव अर धन रौ तौ चोळी-दामन रौ साथ है। हाथ पोलौ तौ जगत गोलौ। इण रासिवाळां री जै है अर सफळता तै है। जित्तौ धन खरचोला, बित्तौ ई मोटौ पद मिळैला। पाछी पाई-पाई वसूल कर सकौ। पारटी टिगट देवै तौ ठीक नींतर निरदळीय जिंदाबाद। पूण-पावलौ लेय'र कोई रै समर्थन में बैठग्या तौ पछै पछतावोला। हे धन्वंतरि!

मकर : मगरमच्छी आंसू बहावणा पड़ै तौ पड़ै! जंग अर चुणाव में सब कुछ जायज है। पण मगरमच्छ ज्यूं आळस खिंडायां काम कोनी चालै। च्यार-दिन दौड़ा-भागी करोला तौ पांच साल मजा करोला। पण गुरु री गति अर राहू री यति सूं मति मारीज सकै। गुरु नै धुरु अर राहू नै झाऊ बणावण सारू साम-दाम-दंड-भेद च्यारू जरूरी है। जै काळी कलकत्ता वाळी!

कुंभ : भांडौ फूट सकै। राहू-केतु दोनूं करड़ा है। विरोधी लियां-दियां खड़्या है। टिगट मिलतौ-मिलतौ कट सकै। पारटी रौ उम्मीदवार पैराशूट सूं भी उतर सकै। कार्यकर्ता मूंडै आगै मीठा बोलै पण परपूठ काट करै। निरदळीय लड़्यां पारटी बारै काढ देवैला। जीत्यां पछै ई कोई कोनी बुलावैला, क्यूंकै सत्तादळ बहुमत सूं आवैला। बाबौ भली करै!

मीन : अेक मछली पूरै तळाब नैं गंदौ कर सकै। इण वास्तै विरोधियां सूं सावचेत रैवण री जरूरत है। वायरस घूम रैया है। चुणावी समीकरण रौ गणित गड़बड़ाय सकै। आटा री गोळ्यां बणा-बणा'र मछल्यां रा बाका भरता रैवौ। मोटी-ताजी हुय'र जासी कठै? पाणी में रैय'र मगर सूं बैर कुण बांधैला। पण थोड़ी सावचेती री जरूरत है। जै जलंधर!

❖❖

राजपुरोहित रैवास, कृपाळ भैरूं मिंदर रै लारै
सर्वोदय बस्ती, बीकानेर-334004
मो. 7610825386

● *ओळूं*

जनकवि हरीश भादाणी

सुनील गज्जाणी

दिनांक 2 अक्टूबर 2009 नै सुक्करवार री दिनूगै मितर रमेश भोजक 'समीर' रौ फोन आयौ के 'हरीश जी पूरा हुग्या।' अचाणचक औ सुण'र करंट-सो बापरग्यौ सरीर मांय। बेमार तौ हा इज, जनकवि हरीश भादाणी जी, राजस्थान रा बच्चन, दादू, यायावर आद नांव सूं ई ओळखाण राखण आळा भादाणी जी रौ राजस्थान रा साहित्य-जगत में लूंठौ नांव है।

जन-जन बिचाळै 'रोटी नाम सत है' आळा हरीश जी रोटी नाम सत है सूं सदीव निरवाळा रैया। आपरै आं अमर आखरां रै फूलां री सौरम नै ओढ्या— 'रोटी नाम सत है, मैंने नहीं कल ने बुलाया है, सीटियों से सांस भर भागते बाजार मिले, क्षण-क्षण की छैनी से काटो तो जानूं' जिसी लूंठी रचनावां रा सिरजक। 3 अक्टूबर नै दिनूगै नौ बज्यां आपरी देह दान जातरा छबीली घाटी सूं मधरै-पधरै चाल सूं गाडी मेडिकल कालेज कानी वहीर व्ही। अै कंवळा पगलिया म्हारै मगज में ई धीमै-धीमै थपेड़ा मारण लागग्या। म्हारी ओळूं रौ वातायन हरीशजी रै सागै बिसराई बातां नै जकी पढी ही, सुणी ही, पूठी मूंगी हुवण लागगी।

कीं बगत पैली जद वै कोठारी अस्पताळ में भरती हा तौ सनीवार रै दिन सिंझ्या नै वांरै स्वास्थ्य रौ पूछण नै गयौ हौ। अस्तपाळ रै कमरै मांय श्रीलालजी जोशी, श्री हर्षजी, जुगलजी खड़गावत बैठा हा। हरीश जी बोल नीं सकता हा, जे वै कीं बोलण री खेंचल ई करता तौ इयां लागतौ के ज्यूं उणां रै मूंडै रा बोल बैरण पवन गिट जावती व्है। म्हैं वांनै चरण-परस कियौ तौ वै हाथां सूं फगत इत्तौ ई सेना-मेना कैयौ जिकौ म्हैं ज्यूं री त्यूं मगज मांय संभाळ्योड़ी है स्यात इण दरसाव नै फगत अेक लेण मांय मांडणौ म्हारै वास्तै किणी उपन्यास री ओळ्यां मांडण सूं कमतर कोनी। हरीश जी मुळक्या फेरूं वै आपरै हाथ री आंगळ्यां नै लेखनी झालण आळै ज्यूं आळी ज्यां कर ली। म्हैं समझग्यौ हौ उणां री भावना, उणां रै अंतस री बात। म्हैं इण भांत सराईज्योड़ौ अेक दम मून धारयां लगोलग हरीश जी नै निरखण लागग्यौ। म्हैं वांरै पगां पड़ पूठौ टुरग्यौ घर कांनी। बस, वांरी आसीस इयां ई रैवै के म्हैं लगोलग ओळ्यां मांडतौ रैवूं।

हरेक मोड़ माथै हरीश जी रा हेताळू हाथां में फूलमाळावां लियोड़ा ऊभा हा, आपरा सरधा-भाव परगट करण वास्तै। चारू कांनी आभौ गूंजतौ हौ, 'कामरेड नै लाल सलाम, लाल सलाम!' आम आदमी सूं लेय'र खास लोगां तांई इण देह-दान जातरा में भिळियोड़ा हा।

11 जून, 1933 में जलम्योड़ा श्री हरीश भादाणी रै बारै में वांरै घर में कोई सोच्यौ ई नीं हुसी कै औ टाबर राजस्थान रौ जनकवि बणसी।

हरीश जी बीकानेर में बेबा महाराज रै घरै जलम्या जिका ठेठ पुष्करणा ब्राह्मण हा, पण हरीश जी सदांई अळगा इज चाल्या अर आपरै हवेली जिसै घर नै सदीव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इज मानता हा। जिका ई उणां रा भायला आद हा, जित्ता दिन होवता उण हवेली में रैवता तौ खाणौ-पीणौ ई बठै ईज चालतौ।

अेक बात भळै के जद हरीश जी जलम्या तौ वांरा जलम रै थोड़ा दिनां पछै ई वांरा पिताजी बेबा महाराज संन्यास ले लियौ अर वांरी माताजी इण दुख में इज कीं महीनां पछै देवलोक सिधारगी। इण अबखै बगत में हरीश जी नै वांरा दादोसा पाळ्या-पोस्या। कीं लोग वांनै अपसुगनी आबर ई कैवण लागा। जद किणी टाबर उपर औ नांव थरपीजण लाग जावै तद उण माथै कांई बीतै , आ वौ इज बता सकै, जिकौ हरीश जी आपरौ दरद इण भांत कैयौ—

''सणौ, हियै माथै हाथ राख / हेलीदार परजापतियां नै / लागगी छूत ज्यां उठा'र / पैरायी म्हनै अेक कंठी / जड़ी ही जिण माथै अेक थेगड़ी / खुद्योड़ौ हौ उण माथै ऋंग-क्लिंग री लिपि मांय / अपसुगनियौ / किटकिटावता रैवता उण रा दांत / आयौ है दो नै काढ'र / कुबुद्धी तौ निसरसी ही / इसा ई पालणा मांय हींड-हींडतौ / आलै सूं सूखौ / सूख'र हुवतौ हुयौ / हुय ई गयौ म्हैं / पांच फुटौ कीकर।''

हरीश जी आपरा अमर गीतां नै आपरै मीठै कंठ सूं लुभावणौ गावता। इण कंठा पर हरेक हेताळू गुमेज करता, मानीजै के इण भांत मीठौ कंठ उणां रा पिताश्री बेबा महाराज रै परताप सूं हौ, जकां रौ खुद रौ कंठ घणौ मीठौ हौ।

हियौ हरीश जी री ओळूं में रम्योड़ौ हौ, पण सरीर उणां री अंतिम जातरा में चालतौ हौ। वांरै नांव रा नारा लगोलग लागणै सूं म्हैं मनड़ै सूं ई देह-दान जातरा रै सागै हुयग्यौ 'देह-दान करण आळा हरीश भादाणी अमर रैवै', 'कामरेड नै लाल सलाम, लाल सलाम' रा नारा लागता हा। हरीश जी अणंत नींद मांय सूत्या हा, अेक छोटै-सेक दीवान माथै, वांरै अेड़ै-छेड़ै श्रीलालजी जोशी, सरल विशारद, कीं घर रा लोग अर गाडी रै केबिन में वांरी बेटी सरला जी आली आंख्यां लियोड़ी बैठी ही। श्रीलालजी बगत-बगत माथै 'जनकवि हरीश भादाणी, जिंदाबाद-जिंदाबाद' रा नारा आपरी गूंजती भारी आवाज में लगावता हा। वांरै साथै राजेन्द्र जोशी ई वांरौ सागौ करता हा। जातरा केई ठौड़ सूं हुवती निसरती ही।

मनड़ौ पूठौ हरीश जी री ओळूं में घिरतौ जावतौ हौ। हरीश जी नै कवि बणावण रौ कारण ई बेबा महाराज बण्या, जद वै (बेबा महाराज) संन्यासी बणग्या तद हरीश जी आपरै बाळपणै सूं राजी नीं हा। ठावस नीं हौ, मन में धीर नीं होवण सूं वै आपरी खिमता सूं आपरै कंवळै मन नै कीं लिखणै री दिसा में फेर लियौ अर वौ कंवळौ मन कवि-गीतकार बणणै रा पगोथिया चाढण लागग्यौ। आ बात अळगी है के हरीश जी री भणाई किणी पोसाळ मांय नीं घर में सरू हुई अर सरुआत री भणाई हिन्दी, महाजनी अर संस्कृत मांय व्ही।

हिंदी अर राजस्थानी रा लूंठा लिखारा हरीश जी मजूरां अर करसां री जीवण जूंझ सूं लेय'र प्रकरति अर वेद री रिचावां माथै ई आपरी नुंवी कविता री प्रगतिशील-जनवादी धारा

थरपी। राजस्थानी लोकगीतां री तरज आपरा गीतां में वापरी। वै मजूरां रा आन्दोलनां मांय हिवड़ै रा हार बणग्या। हरीश जी बाबत कीं औ ई मानीजै अर कैयीजै के जिकौ कवि रूमानियत, हेत, भावनावां में रम्योड़ी ओळियां मांड्या करतौ हौ, वौ श्री रमण माहेश्वरी सूं भेंट हुयां पछै अेक दम निरवाळौ कवि बणग्यौ, मार्क्सवादी दरसन मांय पूरी तरै रच्यौ-बस्यौ हुयग्यौ अर अेक लूंठौ कवि वौ ई जनकवि बणग्यौ।

मुम्बई-कोलकाता मांय हरीश जी रौ रैवास उणां री लेखनी रौ सोनलिया बगत कैयौ जा सकै, क्यूंके जद-जद वै महानगरां मांय आपरौ रैवास करयौ, तद-तद अेक लूंठी रचना इज वांरी लेखनी सूं निसरी। कांई कोई सोच सकै के आं बडा-बडा नगरां मांय, जठै जिंदगाणी सरपट भागती रैवै, जठै मिनखाचारौ सोधणौ पड़ै, संवेदनावां फगत बंतळ मांय हुवै, इस्या नगरां मांय रैवास करनै ई वै चावा हिंदी गीतां— ''सीटियों से सांस भर कर, मैंने नहीं कल ने बुलाया, क्षण-क्षण की छैनी से....' आद री रचना करी।

स्हैर मांय रोजीना कोई न कोई री अंतिम जातरा निकळती ई हुवैला, जिकौ किणी स्हैर वास्तै आम बात हुया करै, पण आ अंतिम जातरा स्हैर वास्तै आम हुवता थकां ई खास बणगी ही, वा इण कारण के आ 'देह-दान' जातरा है, जिकी आम नीं, खास बात हुवै जिकौ हरेक सोच ई नीं सकै। जातरा स्हैर रै मुख्य मारग सूं निकळ रैयी ही। हरीश रै हेताळुवां री संख्या ई मोकळी ही— भारी भीड़, खासी गाडियां, इण कारण यातायात व्यवस्था ई बिखरगी ही, जिणनै संभाळण सारू श्री नन्दकिशोर सोलंकी ई पुलिस वाळां साथै लोगां नै सावचेती सूं चालण री अरज करता हा। औ हरीश जी सूं अंतस रौ हेत लखावतौ, सोलंकी जी उण बगत अेक राजनीतिक दळ रा अध्यक्ष हा। ठौड़-ठौड़ हेताळू हरीश जी माथै माळावां चढावता, धोक खावता हा।

म्हैं फगत सुण्यौ ई हौ के आकाशवाणी रै इंटरव्यू में जद श्री प्रमोद कुमार शर्मा बीकानेर रा युवा कवियां री कूंत करतां पूछ्यौ के किण नै आवतै काल रा कवि कैय सकां, तद हरीश जी सुनील गज्जाणी अर संजय आचार्य 'वरुण' रा नांव बताया। म्हनै जद इण बात रौ पतौ लाग्यौ तौ म्हनै आ बात किणी सनमान सूं कमती नीं लागी। आ घणी मोटी बात ही म्हारै वास्तै के अेक जनकवि री वाणी सूं म्हां आदरीज्या। 'घणौ-घणौ नमन आदरजोग नै।'

हरीश जी आम जन रा कवि हा, जनकवि हा। जद मायड़ भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में भेळी करण सारू आन्दोलन चल्यौ, उण बेळा कांधै सूं कांधौ मिळाय'र वै सागै रैया अर उण बगत उणां रा लोकगीत हरेक रै मूंडै आयग्या अर खूब गाईज्या। वां हिन्दी अर राजस्थानी में केई पोथ्यां लिखी। प्रौढ शिक्षा री अनौपचारिक शिक्षा माथै ई पोथ्यां लिखी। वांरी हिन्दी गीतां री पैली पोथी 'अधूरे गीत' बरस 1959 में आई अर छैली पोथी 'आखिर जिज्ञासा' (गद्य) अर राजस्थानी री 'जिण हाथां आ रेत रचीजै' 2007 में।

देह-दान जातरा लगैटगै दोफारां बारा बज्यां-सीक मेडिकल कॉलेज पूगगी। डाक्टरां रौ अेक दळ दरवाजै अगाड़ी पैली सूं ई ऊभौ हौ। जद वांरी देह नै मांयलै पासी लेजावण लाग्या

तौ हरीश जी रै परिवार रा लोग अर दूजा हेताळुवां री आंख्यां जळजळी अर कंठ गळगळा व्हेग्या। मीडिया आळा आपरै काम में लाग्योड़ा हा। मांय नै अेक हाल में जठै हरीश जी नै राख्या हा, बठै मेडिकल रा छात्र-छात्रावां आपरी मेजां माथै भणाई री पोथ्यां खोल्यां ऊभा हा। हरीश जी माळावां सूं लदग्या, चस्मौ पैरयां अेक दम मूक चिर निद्रा में लीन हा। सैंग जणा धोक लगाय-लगयनै पूठा हॉल सूं बारै निकळण लाग्या।

कॉमरेड नीं रैया, पण हरीश जी आपरै लारै आपरा विचार अर सिरजण-संसार छोड गिया। आपरी हिन्दी मांय 'सुलगते पिण्ड' (काव्य : 1966), सन्नाटे के शिलाखण्ड पर' (काव्य), रोटी नाम सत है (जनगीत), एक अकेला सूरज खेले (काव्य) समेत उन्नीस पोथ्यां प्रकाशित व्ही अर राजस्थानी मांय 'बाथां में भूगोल', 'खण-खण उकळे हूणिया', 'खोल किवाड़ा हूणिया', 'सिरजण धरा हूणिया' (काव्य-सोरठा), 'तीडो राव' (नाटक) अर जिण हाथां आ रेत रचीजै (काव्य) जिसी पोथ्यां प्रकासित व्ही।

हरीश जी जनवादी लेखक संघ (जनवादी लेखक संघ) रा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रैया। 1960 सूं 1974 तांई 'वातायन' रौ संपादन करयौ, कोलकाता सूं निकळण वाळी मार्क्सवादी पत्रिका 'कलम' सूं आपरौ तगड़ौ जुड़ाव रैयौ। 'वातायन' बाबत तौ कैवत ई है हरीश जी घर फूंक तमासौ देखै।

'राम नाम सत है' आपातकाल रै बगत नुक्कड़ रौ जनगीत गण नांव कमायौ। इण सिरजणकर्ता रै वास्तै 'राम नाम सत्य है' कीकर गायौ जाय सकै! हरीश जी कदैई रूढिवाद सूं कोई सरोकार नीं राख्यौ। वै जीविया जित्तै आपरी मन री करी अर मरयां पछै भी वांरी इच्छा मुजब रूढिवाद नै तोड़ता देहदान कियौ। आखिर मांय जनकवि नै निवण करता थकां इत्तौ ईज के साहित्य हेताळू अर जनता वांनै कदैई नीं बिसराय सकै। वै सदैव आपां रा अंतस मांय रैवैला, वांरा गीत हमेस आपां रै ओळै-दोळै सोसण रै सांम्ही ऊभ मुगती रा नूंवा मारग बतावैला।

❖❖

सुथारां री बडी गवाड़
बीकानेर (राज.) 334005
मो. 995021557

डॉ विनोद सोमानी 'हंस'

जाण्यौ-अणजाण्यौ

म्हनै ठा है
कांई भी नीं मांड सकूंला
फेरूं कांई गावूंला।

भावां रै आधीन
कियां सुंततर रैवूं
ऊब री बास
चारूंमेर रळमळगी है
गुजर चुक्या है
केई राकेट म्हारै कनै सूं
पिस्टन री जियां
घूमै है चिड़ीघर रौ न्हार
सैंग बस्ती नींद में है
गळी रा गंडकड़ा
आपरा अहं नै
बिन बात उछाळै है
केई मोतां बैठ्या-बैठ्या
म्हैं कर नांखी है
सिरजण रा पांख
फड़फड़ा रैया है
उण सांमली जाळी सूं
लपटां ऊठ रैयी है
सैमूदौ झूंपौ
राखोड़ौ बणग्यौ है
दमकलां टन-टन-टन
कर रैयी है।
सगळी बस्ती
आदी है इण सब सूं
म्हैं नीं जाणूं
कठै जावूंला
पण
म्हनै ठा है
कांई भी कैय नीं पावूंला
फेरूं कांई बतावूंला।

❖❖

42/43, जीवन विहार कॉलोनी
आनासागर सरक्यूलर रोड,
अजमेर 305004 (राज.)

डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी

बाप

बाप, कांई हुवै!
किसी आभ उणरै वर्चस्व री
कठै चिलकै उणरौ वजूद
संबंधां री दुनिया में!
कित्तौ अणबूझ है बाप रौ मन
कित्ती अळूझ्योड़ी उणरी क्रियावां
बेसुरी झणकार है बाप
परवार री मधुर सरगम में।
बाप, कद जाणी मन री मरजी
कोई नीं झालै उणरा बोल
कोई दूजौ ई हुवै नियंता
उणरी जीवण-पद्धति रौ।
बाप, मुखियौ फगत नांव रौ ई,
वौ तौ है अेक जमूरौ
जादू रै खेल रौ।
बाप, कदै हुवै टाबरां रौ 'हाउ'
तौ कदै डरावै 'बाबौ' बण,
वौ घोड़ौ बण सकै गट्टू रौ
पण निषेध है उणरै वास्तै
लाड-लडावणौ गोदी में,
कहीजै, बाप रौ प्यार
बिगाड़ देवै टाबरां नै
कांई पडूत्तर है बाप खन्नै?
बाप तौ बस, सवाल ई सवाल है!
बाप, केहड़ौ है जीव?
कांई है उणरौ वर्चस्व
कांई है उणरी हस्ती,
बाप बण्यां ई ठा पड़ै।
❖❖

पूजाश्री

धरती धंस जावै

सत्ता पर बैठ्या लोग जद,
सेज पर सोय जावै—
काळ पड़ जावै।
घर-गिरस्थी वाळा जद,
चौपड़ बिछावै—
बाढ़ आ जावै।
जागरण रा जोगी जद,
भांड व्है जावै—
जस मर जावै।
धरम तप री धूणी जद,
कैद व्है जावै—
तेज बळ जावै।
लुगायां नै लोग जद,
दांव पर लगावै—
धरती धंस जावै।
❖❖

बंगला नं. 1, इन्द्रलोक
स्वामी समर्थ नगर, लोखंडवाला
अंधेरी (पू.) मुंबई 400053

कुमार अजय

बरखा

छबळ-छबळ करता
किलकारियां मारता
बाळकिया मचा रैया है
धमाचौकड़ी
इंदर राजा
बरस रैयौ है झमाझम।
अर डागहा माथै चढ'र
बिरखा नै निरखतां
भीज रैया है माणस
उठा रैया है आणंद
आभै सूं पड़तै
समदर रै पांणी रौ।
डांगरां-ढोरां तांई रै
मूंडा माथै
खिळखिळाटौ है, मुळक है
मोरिया-चिड़कल्यां रै चैंचाटै सूं
रौनक है, मौसम मांय
कुल मिलाय'र
ब्होत ई सोवणौ है मंजर
अर बाकी सैंग चीजां ई।
अर जद सगळा ई
मसगूल है इण रेळमपेळ में
अेक मिनख
अंधारी कोटड़ी मांय पड़्यौ
खर्राटा पाड़ै।
थोड़ी ताळ मांय ऊठ'र
न्हावैला-धोवैला
अर टीपण-सेंटर सूं आयोड़ौ
कचरौ ठूंस'र
रात री पाळी मांय
आपरी ड्यूटी माथै चल्यौ जावैला
वीं रै भावै भलां ई
बरसता रैवौ झमाझम
इंदर राजा।

❖❖

सहायक जनसंपर्क अधिकारी,
सूचना केन्द्र, चूरू (राज.)

इरफान अली

गरीबी

जिण घर मांय जावै
केई-केई रूप दिखावै
भूखौ सुवाणै
आंसू रा घूंट पिलावै
टाबर अर बूढां माथै
तरस नीं खावै
गरमी में तपावै
अर झुळसावै
सरदी में ठिठुरावै
अर हाथ कंपावै
बरखा में भिजोवै
सड़क माथै सुवाणै
ठौड़-ठौड़ भटकावै
कम हँसावै
घणौ रुवाणै
भलै मिनख नै
अपराधी बणावै
गरीब नै कोई
मूंडै कोनी लगावै,
अबखै बगत में
भगवान गरीबी सूं बचावै।

❖❖

उस्तां रो मोहल्लो, बीकानेर (राज.)
मो. 9983183754

●*लघुकथा*

अबला जीवन हाय

सावित्री चौधरी

म्हैं दिनूंगै जागी तौ घर मांय सुन्याड़ छा रैयी ही। भाईजी आंगणै में ढळी खाट पर दोन्यूं हाथां सूं सिर नै थाम्यां बैठ्या हा। मां तिबारी री भींत कै स्यारै बैठी माळा फेरती, धोती रै पल्लै सूं आंसू पूंछ रैयी ही। तीनेक साल री मुनिया अेक कानी कूणै में खड़ी सुबक रैयी ही। भाभीजी दीखी कोनी, तौ म्हैं सोच्यौ, सूती हुसी स्यात।

कीं देर खड़ी म्हैं सोचती रैयी। फेर मां कनै जाय'र पूछ्यौ, ''भाईजी, यूं गुमसुम कियां बैठ्या है? भाभीजी कठै है? अर तूं कियां आंसू... ?

''अरे, किसी भाभी-साभी?'' म्हारी बात काटती थकी मां गुर्राई, ''बहू तौ डूबोय दिया म्हांनै।'' ईंया कैय'र धोती रै पल्लै नै मूंडै पर मेल'र मां रोवण लागी। म्हनै ब्हौत रीस आई बीं पर। पतौ नीं, लुगायां नै रोवण री कांई जल्दी माची रैवै? बात रौ म्हनै तौ जबाब कोनी दियौ अर आंसू ढळकावण लागी! भाईजी बैठ्या हा, जींसूं चुप रैयगी, नीं तौ मां नै खूब सीठणां सुणाती म्हैं।

''कांई बात है भाईजी? भाभीजी सूं अैण-टैण हुयगी दीखै।'' म्हैं नरमाई सूं पूछ्यौ। उणां आपरी निजरां ऊपर नै चकी अर फाटी-फाटी आंख्यां सूं म्हनै घूरण लाग्या। कीं ठैर्‌या अर घिरणा भर्‌यै सुर में फूंफाया, ''नाम मत लै, म्हारै आगै बीं निरभाग लुगाई रौ। नीं तौ म्हैं उणरी घेटी... म्हैं उणरी घेटी...।'' किरोध सूं भर्‌या बै आगै नीं बोल सक्या अर जोर सूं फरस पर थूक्यौ।

म्हारौ तौ माथौ चकरावण लाग्यौ। रात रा तौ सगळा हंसता-बोलता सूत्या हा। अबै उठतां ईं इणां रै कांई हुयग्यौ? भाभीजी भी आज ऊठी कोनी हाल तांई।

छेकड़ म्हैं आंगणै रै कूणै में अणमणी खड़ी सुबक रैयी ही मुनिया कनै गई। बीं नै गोदी मांय उठा'र पुचकारी, लाड कर्‌यौ अर छात पर लेय'र गई।

''मुनिया, तूं क्यूं रोवै है? थारी मां ऊठी कोनी कांई? थारा पापाजी कियां मूंडौ सुजाय राख्यौ है?'' म्हैं पूछ्यौ। अेक दफै में ई इत्ता सवाल सुण'र मुनिया जियां घबरायगी ही। कीं बगत पछै फिराक सूं आंसू पूंछती बतावण लागी, ''म्हाली मां, अंदल है कमलै में। औल... औल... पापाजी म्हनै भोत कूटी... आंगणै मांय...।'' बात अधूरी छोड'र मुनिया फेरूं बिलख पड़ी।

म्हैं भतीजी नै छाती सूं लगाय ली। कद सूं माथा-पच्ची करण लागी ही। अबै जाय'र ठा पड़्यौ कै बेटौ हुवण री बजाय अेक साथै दोय बेटियां नै जलम देवण रै कारण ई मां अर भाईजी, जैरीलै सांप दांई फूंफा रैया है भाभीजी पर, बापड़ी मुनिया पर।

भीतर कमरै मांय, रात रा जलमी दो बेटियां नै छाती सूं लगायां, फळ-फळ कर आंसू बैवावती भाभीजी रौ दुखी अर उदास चैरौ आंख्यां आगै फिरण लाग्यौ। म्हनै भूली-बिसरी कविता फेर याद आयगी— अबला जीवण हाय...।

❖❖

29, सिंधी कॉलोनी, आदर्श नगर, जयपुर-4

सूझ-बूझ

पुष्पलता कश्यप

नवी-नवेली बहू ब्याव पछै दोयेक बरियां आपरै मायकै हुय आई ही। सासरै बावड़्यां मायकै सूं कोई न कोई बीं सूं मिलण नै आयबौ करतौ। कदैई सगा-प्रसंगी, तौ कदैई कोई रिस्तेदार। इत्तां पछै ई बहू री दादी अर मायड़ बीं नै लेवण तांई आयगी।

बहू री सासू 'ना' देवती कैयौ, ''इण तरै तौ इणरौ मन आपरी घर-गिरस्थी में कीकर रमसी ? हरेक तीजै-चौथै दिन कोई न कोई मिलण नै आवतौ रैवै, थे यूं इणनै लेवण नै आवता रैसौ, तद तौ गिरस्थी जमणी दोरी है।''

बहू री दादीसा बीं नै लेय जावण खातर अड़गी, ''म्हे लेवण नै आया हां, तौ लेयनै इज जावसां। ब्याव करयौ है, बेटी बेची नीं है।''

सास नै बां री आ बात अर तौर-तरीकौ नागवान लाग्यौ, ''पछै तौ आप आपरै जवांईसा सूं पूछ लेवौ।''

बहू री मां आपरै जवांई सूं जायनै बोली, ''म्हे बेटी नै लेवण नै आया हां, भेजौ।''

छोरौ बोल्यौ, ''घर मांय म्हारा बडा-बुजुरग बैठ्या है। म्हैं कीकर कीं कैय सकूं ?''

छोरी री मां बारै बीं री सास कनै बावड़ आई।

छोरी औ सगळौ खिलकौ देखै-सुणै ही। बा घर रै चौक में, जठै घर रा सगळा लोग हा, आय'र बोली, ''म्हारी सासू मां म्हनै अबार नीं मेलणी चावै, तौ म्हैं अंगाई नीं चालूं। आप आया ज्यूं ई पाछा जावौ परा।''

बहू री समझदारी रौ आसर औ हुयौ कै कीं दिनां पछै इज सासू खुद बहू नै बीं रै पीहर आपरै बेटै सागै मेल दीवी।

बीं बगत बहू जे खुदपांण-आपांमति बांरै सागै व्हीर व्है जावती तौ बात अंगाई बिगड़ जावती।

❖❖

पुष्पांजलि भवन, जूनै डाकखानै लारै, लक्ष्मीनगर, जोधपुर-342006 (राज.)

डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित

अमावस रौ चांद

अै चांद
थूं कुण'र कांई है ?
म्हनै इण बात रौ
पड़ूत्तर नीं चावै
पण
म्हारौ काळजौ तौ
इण बात सूं दुख पावै—
साची-साची बता
थूं अमावस नै कठै जावै ?

मोत्यां रौ चूण

समदर सूं
रिसाणौ कर'र
राजहंस रै उडतां ई
बुगलौ
मोत्यां रा सपना
देखण लागौ
तद समदर बोल्यौ—
रे बावळा !
माछली खाय'र
पेट भरलै
नीत बिगाड़्यां
भूखां मरसी
आं मोतयां रौ चूण तौ
राजहंस इज करसी।

❖❖

अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, मो. 9928418822

डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र

पीड़—अेक

थूं कांई जाणै
पीड़ कांई व्है ?

वौ बोल्यौ—
म्हारै सबदकोस में
औ सबद इज कोनी।

पीड़—दो

पीड़ म्हैं जाणूं
ज्यूं तातै लोह री
तावयोड़ी चीप
कवंळी चामड़ी माथै
आपरौ निसाण बणाय देवै
अेकर तौ पतौ नीं चालै
पण पछै दिखावै
आपरी ओळख
म्हूं जाणूं पीड़।

आंख्यां मांय हंसतौ गांव

म्हैं देख्यौ
टेसण माथै बैठ्यै
फौजी री आंख्यां मांय हंसतौ गांव
मां, घर अर घरआळी
बाखळ रमती धीव
अर
आखौ देस।
❖❖
मार्फत डी. आर. चौधरी
4 बी-10, जे.एन.वी. कॉलोनी, बीकानेर मो. 9983255410

मातुसिंह राठौड़

परख

बखत-बखत री बात है
कठैई झूंपड़ी अर
कठैई छात है
पण किण-किणनै
परखोगा थे
आ दुनिया तौ
बिना बींद री बरात है।

बै दिन

अबै
निसांसा नाखती रात
मां रा हांचळां में
सिर मारता टाबर,
बोकता गिंडक
पंछियां रौ कळपळाट
आभै में
तारा जोवतौ करसौ
सोचै
धूंधळी-धूंधळी यादां रा
बै दिन।

अबै तौ फकत
अै ई दिन रैयग्या,
लारै रैयग्या बै दिन।
❖❖

सूर्य-सदन
राजगढ रोड के पास, तारानगर
जिला-चूरू (राज.)

मनोज पुरोहित 'अनंत'

म्हारी साख

रात तौ
काल भी ही
आज भी है
काल भी रैसी
पण
बात नीं रैसी।

अंधारौ होसी
काल भी, आज भी
चांदणै री
रैसी उडीक
मिटसी कद ?

दिन रात बिचाळै
भंवसी सबद
सबद बिलाइजसी
अरथाइजसी
मिटसी दिन-रात
खूटसी अरथ
छूटसी बात
गम ई जासी सबद
कुण भरसी साख

म्हैं हूं
पण म्हारी भी
कुण भरसी साख ?
❖❖

24, दुर्गा कॉलोनी, कमला निवास
हनुमानगढ़ जंक्शन (राज.)

सुवाद रा सबड़का : अभनै रा किस्सा

बुलाकी शर्मा

आधुनिक राजस्थानी कविता में सै सूं बत्ता प्रयोग करणवाळा सिरैनांव कवि अर कथाकार मोहन आलोक राजस्थानी भासा री मानता सारू ई समरपित भाव सूं लाग्योड़ा है। वां रौ मानणौ है कै 'किणी भासा री मानता सारू घणो जरूरी हुवै कै पैलां उणनै लोक री मानता मिलै!'

मायड़ भासा राजस्थानी फकत साहित्यकारां री भासा बण'र ई नीं रैय जावै, वा लोक सूं जुड़ै, लोक उणमें रच्योड़ै साहित्य नै चाव सूं पढै अर मोदीजै, इण सारू मोहन आलोक जी कवितावां, कहाण्यां अर दूजै सिरजण रै साथै लोकरुचि रो साहित्य ई सिरजता रैया है। बरसां पैली आप 'डांखळा' रच्या, जिका बरसां तांई 'इतवारी पत्रिका' में छप्या अर लोक में इत्ता चावा हुया कै जिकां नै राजस्थानी भासा कोनी आवती ही, वै राजस्थानी जाणणियां सूं 'डांखळा' नै बंचावता, अरथावता अर आणंद लेवता। 'डांखळा' लोक में ओजूं लग चावा है। स्यात् वै 'डांखळा' रौ सिरजण ई कर रैया हुवै अर आपां बिचाळै नूंवा डांखळा भळै आवै। अस्तु।

अबकै मोहन आलोक जी आपां नै इण भांत रै भोळै-ढाळै दीखतै पण हाजर-जबाब, हंसोड़, मसकरयां करणियै, खरी कैवणियै मिनख 'अभनै' सूं रूबरू करा रैया है, जिकै रा किस्सा सुणनै आपां उणरी चतराई रै भोळावै आम आदमी री समझदारी अर चतराई री दिल खोल'र सरावणा करांला। वै आपरी इण पोथी 'अभनै रा किस्सा' री भूमिका 'लगतै लाळै' में 'अभनै' सरीखै चतर-सुजान नैं आपां रै सनमुख लावण री वजह बतायी है। म्हैं वांरी सोच, वांरै सबदां में ई राखणी चावूं, ''संसार री सगळी ई बडी भासा-संस्कृतियां मांय वां रा आप-आपरा विदूषक हुया है। अरब देसां मांय ज्यूं मुल्ला नसरुद्दीन है। हिंदी मांय 'बीरबल', तमिल-तेलगू मांय 'तेनालीराम', चीन मांय 'आफंती'। जिंदगी जिंदादिली रौ नांव है, तौ जीवट रै इणी जोधावां नै सुण-बांच'र म्हारौ जी करयौ कै मायड़ भासा, राजस्थानी मांय ई इणी ढाळै रौ पात्र हुवै तौ आपणी ई भासा-संस्कृति मांय कीं प्राणां रौ संचार हुवै। अभनो म्हारी इणी लगोलग लगन री सोच है, सोच नईं संभाळ कैवणौ चाईजै।''

कैय सकां कै राजस्थानी भासा-संस्कृति मांय प्राणां रो संचार करण सारू मोहन आलोक जी 'अभनै' सरीखै पात्र नै आपां साम्हीं लाया है।

इण पोथी मांय अभनै रै जीवण सूं जुड़्योड़ा 69 किस्सा है। सगळा किस्सा अेक सूं अेक टाळवां। पढणौ सरू करयां पछै पोथी पूरी पढ्यां ई पार पड़ै। पढती बेळा अर पढ्यां पछै ई

'अभनो' आपां रै हियै में थिर हुयोड़ौ रैवै। म्हैं इणनैं तीन-च्यार बार पढली पण मन करै कै भळै बांचूं। किस्सा है ई इण ढंगढाळै रा कै बांच्यां पछै अभनै सारू सरावणा में अै ई सबद निकळै— वाह रे अभना! लखदाद थनै!

अभनो बस अभनो है। उण री जोड़ रौ दूजो कोई कोनी। सेठ-साहूकार, ठाकर-जमींदार, पंडा-पुजारी, सासू-साळ्यां-साळेळ्यां, सरपंच-पटवारी, कुण ई हुवौ, अभनौ आपरी समझदारी अर हाजर जबाबी सूं वांनै इण भांत चित करै कै जी-सौरो हुय जावै। गरीब-गुरबै में ई समझ हुवै, दुनियादारी रा दंदफंद सूं वौ अणजाण नीं है, वौ ई मौकौ पड़्यां लूंठा कैईजता लोगां नै निरुत्तर कर सकै। वौ धन-संपत्ति सूं कमजोर है, पण बुद्धि में सजोरो है— आ 'अभनो' साफ पतियारौ दिरावै।

इछ्या तौ करै कै अभनै रा सगळा किस्सा आपनै सुणाय दूं पण साथै ई आ चावना भळै कै आप इणनै खरीदौ अर बांचौ। बांच्यां पछै आप दूजां नै अभनै रा किस्सा सुण्यां बिना नीं रैवोला, औ म्हनै पक्कौ पतियारौ है। पण कीं किस्सां री बात जरूर करसूं। गांव-स्हैर रा साहूकार अणपढ नै उधार देवती बेळा किण भांत री बेईमानी करै, जिण री ठाह आपां नै 'अेक बिंदी म्हूं लगाय दूं' किस्सै में मिलै। ''अभनै नैं दसे'क रिपियां री जरूरत पड़ी जणै आपरै बाळगोठियै अेक सेठ कनै गयौ अर दस रिपिया लेय'र बही माथै अंगूठो लगा दियौ। सेठ लालची। बोल्यौ— 'अभना, तूं म्हारौ बाळगोठियौ मिंतर है। ...तूं कैवै तौ तूं पीसा लिन्धा है, आं रै अेक बिंदी और लगादयूं? बिंदी तौ बिंदी हुवै, बिंदी रौ कांई।' अभनो हामळ भर दी। सेठ रौ लालच बधग्यौ। अभनै नै पूछ'र अेक बिंदी भळै लगाय दीनी। अबै अभनै री बारी ही। कैयौ— 'सेठां, दो बिंदी तौ थे लगा दिन्धी। अबै अेक बिंदी आप कैवौ तौ म्हूं म्हारै हाथ सूं लगादयूं। बिंदी तौ बिंदी ई हुवै, बिंदी रौ कांई?'' सेठ सोच्यौ— औ तौ सफा गोंगळूं निसरग्यौ। लोग इणनै घणौ चात्रक अर हुंस्यार समझै। सेठ राजी राजी हुंकारौ भर लियौ। अभनै बही अर कलम झाली अनै अेक बिंदी रकम रै लारै लगावण री जिग्यां आगै लगा दिन्धी। जिणरौ मतलब हुयौ— खातौ बेबाक।''

साच में, ठगी अर बेईमानी करणिया नै सेर नै सवार मिल्यां ई वांनै चेतौ बापरसी।

बाल मनोविज्ञान नैं लेय'र अेक सांतरौ किस्सौ सुणौ। ''अभनै रै टाबरपणै रौ किस्सौ है। टाबरपणै सूं घणौ जहीन अर हाजर जबाब हौ। टाबरां साथै खेलतां बीं री अकूणी रै लागगी। मा छुलेड़ी अकूड़ी माथै पाटी बांधण लागी तौ अभनै आपरौ दूजोड़ौ हाथ बीं रै आगै कर दिन्धौ। मा बोली— 'मरज्याणा! लाग्योड़ी डावड़ै हाथ रै है अर पाटी जींवणै हाथ रै बंधावावै, तेरौ माथौ खराब है कांई?' अभनो बोल्यौ— 'मा, माथौ मेरौ कोनी, टींगरां रौ खराब है। बै दुखण आळी जिग्यां नै जाण'र दुखावै।''

इणी तरै बालमन नै परखतौ अेक और किस्सौ बताऊं। ''अभनो सात-आठेक साल रौ हौ जणै मा साथै मेळै गयौ। बेजां भीड़। अभनो मा सूं बिछड़ग्यौ। मा नै घणी ई सोधी, पण मिली कोनी जणै बौ मिंदर रै चूंतरै माथै ऊभौ हो'र हेला पाड़ण लाग्यौ, 'अे माऽऽ मनकोरड़ीऽऽ! अे माऽऽ मनकोरड़ीऽऽ ईऽऽऽ! म्हूं अठै हूंऽऽ अेऽ। मा हेलौ सुण'र आयगी पण आपरौ नांव लेय'र हेलौ पाड़ण सूं रीसाणी हुयगी ही। जणै अभनो भोळपणै सूं पडूत्तर दीन्यौ— 'मा तौ अठै सगळी ई है! नाम लियां बिना थांनै के ठाह लागतौ कै म्हूं थांनै बुलाऊं हूं।''

अभनै रा किस्सा अेक सूं अेक सवाया है। 'रिस्वत' रौ बोलबालौ अबार सूं नीं, राजावां रै जमानै सूं है। ''बीकानेर महाराजा राजगढ़ दौरै पधारया जणै अभनै 'रिस्वत' रै खातमै रौ अेकदम मौलिक सुझाव दीन्यौ— 'अन्नदाता! रिपियौ छोटी-सी चीज है। कोई किणी सूं ले'र कणा खूंजै मांय घाल लेवै, ठाह ई कोनी पड़ै। सौ रिपियै नै 'गज' रौ करद्यौ। लेवणियौ अर देवणियौ दोनूं ई चौड़ै आ जासी। ल्यकोसी कठै?''

ब्यांव हुयां पछै छोरा चटकै आपरी बीनण्यां नै लेय'र न्यारा हुय जावै। मा-बाप री दर ई चिंता नीं करै। आज री युवा पीढी री इण बदळी मानसिकता माथै 'दो तौ डाकण ले लिन्धा' किस्सै में करारी चोट करीजी है। पुराणै जमानै में गांव मांय नूंवौ कूवौ खुदावणौ हुवतौ तौ 'सूंघै' नै बुलाईजतो। बीं री तुक कई बार चाल जावती अर ठगी रौ ठरकौ चाल जावतौ। 'सूंघो' किस्सै में अभनो इण भांत रै सूंघै नै इण भांत पाधरौ करयौ आपरी हाजरजबाबी अर चतराई सूं कै सूंघोजी पछै गांव कानी झांक्यौ ई कोनी।

अभनै री तौ पून ई पून है, म्हारली-सी करल्यौ, बेचूं ई कोनी, इत्तौ बावळौ कोनी, च्यार आनां रै पीसा खातर, उण सूं कित्तौ ई भलौ, म्हैं कीं रै जासूं, म्हूं मानूं ई कोनी, कोई तिरती डूबती आवै तौ, पिया नईं आए, बूर देसूं, घी किसोक हुवै है, ठाकुरजी दिया जिसा, निसाणी, मूंडै ऊपर ई थूक दिया करूं हूं, माऊ न हुवै तौ... न्यारै-निरवाळै अंदाज रा अै किस्सा बांच्यां आपां नै हंसी आसी, साथै ई अभनै रौ चरित्र सांप्रतक ऊभौ हुय जासी।

म्हूं 'अेक काकड़ियै रौ साग' रै सुवाद सूं आपनै अलायदौ नीं राखणौ चावूं। धणी-लुगाई रै बिचाळै रौ संवाद— ''अभनो रोटी जीमण नै बैठ्यौ। काकड़ियै रौ साग हौ। अभनै री घरवाळी साम्हीं बैठी रोटी पोवै। जीमतै-जीमतै अभनै घरआळी सूं पूछ्यौ— 'साग अेक काकड़ियै रौ बणायौ है कै दो रौ?'

'अेक रौ।'' अभनै री घरआळी उथळौ दियौ।

'दो रौ बणा लेवती।'' अभनो बोल्यौ।

अभनै री घरआळी राजी हुयी। सोच्यौ— साग सुवाद लाग्यौ है, जणा ई कैवै। बोली— 'साग घणौ ई है। थांनै सुवाद लागै तौ और ले लेया।'

'सुवाद री बात कोनी।' अभनो बोल्यौ, 'म्हूं तौ लूण रै हिसाब सूं कैवै हौ।''

सगळा किस्सां मांय इणी भांत रौ सुवाद आसी आपनै। आं किस्सां रौ टीवी सीरियल बणै अर अभनो तेनालीराम, बीरबल दांई चावौ चरित्र बणै, आ चावना है।

'अभनै' रा सिरजक चावा कवि मोहन आलोक जी नै घणा-घणा रंग अर फूटरै सरूप में साम्हीं लावणिया 'आलोक प्रकाशन, श्रीगंगानगर' रौ आभार। इण पोथी नै बांच-बांचनै फेरूं बांचौ अर दूजां नै बंचावौ। 'अभनै' रा दूजा किस्सा बेगा ई आपां साम्हीं मोहन आलोक जी लावैला, अैड़ी उम्मीद साथै।

पोथी : अभनै रा किस्सा / लेखक : मोहन आलोक / प्रकाशक : आलोक प्रकाशन, 207 फोर्थ ब्लाक, चांदी चौक, रामनगर, श्रीगंगानगर / मोल : सौ रिपिया / पाना : 80 / संस्करण : 2015

⌘⌘

सीताराम द्वार रै साम्हीं, जस्सूसर गेट रै बारै, बीकानेर (राजस्थान) 334004

मो. 09413939900

कहाणी-जात्रा में ऊजळ-पख रा अैनाण

डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र

युवा कहाणीकारां मांय डॉ. मदन गोपाल लढ़ा अेक चावौ नांव है। कविता, कहाणी, आलोचना अर अनुसिरजण विधावां मांय मंज्योड़ो औ रचनाकार आपरी कलम सूं लगोलग ओपतौ रचाव कर रैयौ है। लढ़ा आं दिनां आपरै नवै कहाणी संग्रै 'च्यानण पख' रै साथै अेक बार फेरूं पाठकां अर आलोचकां रै साम्हीं हाजर है।

राजस्थानी रा चावा आलोचक डॉ. नीरज दइया आधुनिक राजस्थानी कहाणी परम्परा नै बरस 1955 सूं सरू करै अर आज तांई री जातरा नै चार खण्डां मांय बांटै। चौथै खंड री सरुआत बरस 2001 सूं बतावै। इण दीठ सूं मदन गोपाल लढ़ा कहाणी परम्परा री चौथी पीढी रा कहाणीकार है। आपरी पैली कहाणी 'धोळै दिन रौ अंधारौ' सूं राजस्थानी कथा साहित्य मांय पग मंडाण करणिया लढ़ा आपरी साहित्यिक हूंस रै पाण उतराधै सींवाड़ै रै कहाणी आन्दोलण नै आगै बधावता दीसै।

'च्यानण पख' मांय कुल सतरै कहाणियां है। पैली कहाणी 'आफळ' रै मिस कहाणीकार आपरी रचाव प्रक्रिया नै सबदां मांय ढाळै। नवा लिखणियां-पढणियां री मनगत कहाणी रै मंडाण मंडै। समकालीन राजस्थानी कहाणी मांय 'आफळ' लेखकां री, लेखकां सारू लिख्योड़ी कहाणी कैय सकां। राजस्थानी कहाणी परम्परा मांय इण भांत री आ पैली कहाणी ई मान सकां। कहाणी 'दोलड़ी जूण' ई कहाणीकार री रचना प्रक्रिया रै घाण-मथाण नै उगैरै। साहित्य रै खेतर मांय नवा बदळावां रै सागै आ कहाणी पात्र मनोहर री जिनगाणी रौ खाकौ खींचै। मनोहर आपरै हर सारू जमानै साम्हीं पग रोप लेवै पण भरोसै में तरेड़ पड्यां पछै तूट-सो जावै।

राजस्थानी कहाणी परम्परा मांय आत्मकथात्मक डायरी शैली मांय केई कहाणियां रचीजी है। डायरी शैली मांय रघुनंदन त्रिवेदी, डॉ. सत्यनारायण सोनी, अशोक जोशी 'क्रांत' आद लिखारा कहाणियां रची है। इण परम्परा नै आगै बधावणै रौ काम मदन गोपाल लढ़ा री कहाणी 'च्यानण पख' मांय दीसै। 'च्यानण पख' 9 दिसम्बर, 2010 री डायरी सूं सरू हुवै अर अेक भणी गुणी छोरी री मनगत, उमाव, घर-परवार, समाज, देस अर व्यवस्था रै साथै तकनीक री दुनिया रा चित्राम मांडै। अमावस री अंधारी रात में अेक छोरी रौ आपरै सपना नै

बचावणै सारू सगाई तोड़णै रौ महताऊ फैसलौ अेक सांतरी कहाणी रचै। इण फैसलै रै ओळावै आपां नारी जात नै आपरै हक सारू ऊभी हुवती देख सकां। जिण ढंग सूं समाज अर तकनीक पेटै बदळाव आ रैयौ है कलमकार उण नै ई कहाणी में घणी सावचेती सूं सबदां मांय अंवेरै। बगत री नजाकत नै पकड़णै री आ लकब कहाणी रौ टर्निंग पॉईन्ट मान सकां। अठै चावा कहाणीकार माधव नागदा री कहाणी 'नीलकंठी' ई चेतै आवै। 'च्यानण पख' अर 'नीलकंठी' दोनूं कहाणियां रा मुख्य पात्र लुगाई है। समै, समाज, व्यवस्था अर परिस्थितियां रौ खाकौ दोनां दरसावां मांय है। अेक पात्र दुख भोग रैयौ है। दूजौ पात्र दुख भोगणै सूं पैलां रै उमाव, खुशियां रै पैटे कसुंबल सपना संजौवे। 'नीलकंठी' कहाणी री गीता ब्याव पछै मरदजात रा जुलम सहन करै। 'च्यानण पख' मांय ब्याव सूं पैलां सगपण रौ उमाव, नारी मन री उड़ान, सोशल नेटवर्क अर मोबाइल तकनीक रै सागै मरदजात री सांकड़ीली सोच रा दरसाव मंड्या है। 'नीलकंठी' री गीता बणणै सूं पैलां 'च्यानण पख' री विमला रौ करड़ौ फैसलौ बगत रै बदळावां नै सबदां ढाळै।

'अेक सपनै री मौत' आम आदमी माथै हावी होवतै बाजारवाद नै चवड़ै लावै। कहाणीकार आम आदमी री बेबसी अर लाचारी नै भंवर रै मिस पाठकां साम्हीं राखै। हिंसा सूं कोई काम सिरै नहीं चढै। अहिंसा रौ मारग लोकराज रौ सबळौ पख होवै। कहाणीकार अखबार बेचनै जीविका चलावणियै भंवर री जिनगाणी रा चित्राम मांडै। भंवर आपरी जोड़ायत मंजू नै ब्याव री बरसगांठ माथै मोबाइल देवणै री चावना करै। हिंसक आंदोलण सूं फगत भंवर रा सपनां ई नीं तूटै, कई परिवार ई रुळ जावै। देस री आजादी पछै महात्मा गांधी जी रै देस मांय हिंसा रौ तांडव, भीड़ सूं किरचां-किरचां होवतौ मिनखपणौ ई साम्हीं आवै। कहाणी रौ कॉन्सेप्ट भंवर रै ओळै-दोळै घूमै, पण कहाणीकार भंवर रै मिस हिंसा सूं जूझण वाळा अलेखूं भंवर अर बां रै परिवारां री पीड़ पाठकां तांईं पूगावै। बानगी जोवौ :

''भीड़ सारौ मसलौ चौक माथै ई सळटा दियौ। भंवर री रेहड़ी जमीं पर ऊंधी पड़ी धुकै ही जिणरौ फगत अेक पहियौ साबत बच्योड़ौ हौ। अखबारां रा टुकड़ा फड़-फड़ करता हवा रै सागै उडै हा। जमीं माथै निढाळ पड़्यौ भंवर आपरी जमा पूंजी खोय'र सूनी आंख्यां सूं आभै कानी तकावै हो। मंजू रै सपनां रै मोबाइल री किरच्यां चौक माथै खिंड्योड़ी दीसै ही।''

(अेक सपनै री मौत, 69)

इण संग्रै री कहाणियां जियां छिब, कोड, टूणौ, फांस, काठी बांथ आद मांय मिनख रै बधतै लालच, दोगलैपण, सामाजिक विडरूपतावां, विस्थापन री त्रासदी अर संवेदना री सूकती बेल रौ खुलासौ होवै। जद मिनख रै आपबीती होवै तद उणरी आंख्यां खुलै। कहाणीकार पाठक नै आ आपबीती कहाणी री मारफत बतावै-दिखावै। समाज नै आगूंच ई संवेदना रै स्तर माथै त्यार करै, चेतावै। 'च्यानण पख' संग्रै री कहाणियां पाठकां नै समै, समाज मांय पसरियोड़ी सामाजिक विसंगतियां सूं अरू-भरू करावै। इक्कीसवैं सईकै रौ बदळतौ परिवेस, शिक्षा, संस्कार, अपणायत, मिनखपणौ अर सगपण रौ लेखौ-जोखौ लेवै।

'च्यानण पख' कहाणी संग्रै आपरै बगत अर जीयाजूण नै गहराई सूं जांचै-परखै। आरती प्रियदर्शिनी री गळी, च्यानण पख, उदासी रौ कोई रंग कोनी हुवै, दोलड़ी जूण राजस्थानी कहाणी परम्परा मांय उत्तर आधुनिकता री ओळखाण करावै। इण संग्रै री कहाणियां गांवावूं जीयाजूण, कस्बाई मध्यम वर्ग रै साथै लुगाई जात री पीड़ा नै सुथराई सूं प्रगटै। भासा अर शैली रै स्तर माथै नवा प्रयोग कहाणी नै नवै मुकाम पुगावै। मदन गोपाल लढ़ा कनै युवा मन री मनगत अर पीड़ नै परोटण री जबरी कारीगरी है।

''अमनड़ी पर जाणै बिजळी पड़गी। इत्तौ अन्याव। साब बीं कानी लालची निजरां सूं देखै हौ। बा आपौ बिसरगी अर पगां में चम्पल घाल'र तलाक-तलाक करती निसरगी। पण अबै कठै जावै ? बाप रै घर रा दरूजा जे खुला हुवता तौ बीं नैं व्हीर ही क्यूं करतौ। बा अबै बठै फेरूं नीं जाय सकै। अमनड़ी भळै ई अनजाण गळ्यां में चाल पड़ी। चौराहै माथै खोखा वाळा अर अेक-दो बाबू टाईप रा लोग बीं कानी रूप-रस पावण री आस में तकावै हा।''

(धोळै दिन रौ अंधारौ, 39)

कहाणी रै कथानक नै गूंथणो अर रचणौ, पारखी दीठ, पाठक नै बांधणै रौ हुनर लढ़ा री कहाणियां मांय पड़तख देख्यौ जा सकै है। उत्तर आधुनिक राजस्थानी कहाणी परम्परा मांय सक्रिय युवा लिखारां मांय मदन गोपाल लढ़ा सिरै है। आ बात 'च्यानण पख' री कहाणियां सूं पुखता होवै।

पेपरबेक मांय छप्योड़ी 'च्यानण पख' पोथी राजस्थानी पोथियां मांय नवी सिरजणा री सरुआत करै। पोथी छपण रै पैटर्न मांय ई बदळाव रा अैनाण मांडै। सै सूं पैलां कहाणीकार रौ परिचै, फेर अेक टीप 'आ अेक काल्पनिक पोथी... प्रकाशक सूं अनुमति लेवणी जरूरी है।' इण पछै राजस्थानी रा चावा आलोचक कुन्दन माली री पारखी भूमिका 'कहाणी रै बिगसाव रौ नवौ पांवडौ', खोळ रौ चित्राम अर छपाई बंधाई ई सांगोपांग है।

मदन गोपाल लढ़ा रौ 'च्यानण पख' कहाणी संग्रह राजस्थानी री नवी कहाणी रै आंदोलण नै आखै भारत री समकालीन कहाणी परम्परा रै सैंजोड़ ऊभौ करै। लढ़ा री केई कहाणियां अैड़ी है जकी भारतीय कथा परम्परा मांय गीरबै रै साथै राखी जा सकै। 'च्यानण पख' अर 'उदासी रौ कोई रंग कोनी हुवै' नवै ढंग-ढाळै री सांतरी कहाणियां है जकी युवा मन री फिरोळ करै। इण बात री साख मदन गोपाल लढ़ा री कहाणियां रौ हिन्दी अनुवाद देस री नांवी पत्र-पत्रिकावां मांय छपणौ है। डेली न्यूज, वागर्थ, इन्द्रप्रस्थ भारती, नजरिया आद में छप'र अै कहाणियां आखै मुलक में पूगी है। राजस्थानी कहाणी री विगसाव जात्रा में च्यानण पख लागणै रौ पतियारौ दिरावण वाळी इण पोथी रौ हियै तणौ स्वागत है।

पोथी : च्यानण पख / विधा : कहाणी / कहाणीकार- मदन गोपाल लढ़ा / प्रकाशक : कलासन प्रकाशन, बीकानेर / पाना : 80 / संस्करण : 2014

⌘⌘

मु.पो. कुलचन्द्र, वाया संगरिया
जिला हनुमानगढ, 335063
मो. 09983255410, 9785417754

डॉ. नमामीशंकर आचार्य

आधुनिक राजस्थानी कहाणी माथै परिसंवाद : अैनाण

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली अर मुक्ति संस्थान, बीकानेर रै भेळप मांय 27 सितम्बर नै होटल राजमहल मांय आधुनिक राजस्थानी कहाणी माथै परिसंवाद 'अैनाण' परिसंवाद रौ आयोजन हुयौ। इण मांय स्वागत भासण अकादेमी रा पदाधिकारी शान्तनू गंगोपाध्याय दियौ। इण मौकै अकादेमी रा राजस्थानी परामर्श मंडल रा संयोजक डॉ. अर्जुनदेव चारण कैयौ कै आधुनिक राजस्थानी कहाणी पेटै आलोचनात्मक दीठ सूं काम व्हैणौ चाईजै।

कार्यक्रम रै पैलै सत्र मांय डॉ. चेतन स्वामी अर डॉ. नीरज दइया राजस्थानी रा चार-चार कहाणीकारां री कथावां माथै केन्द्रित आपरा पत्रवाचन कर्‌या। अध्यक्षता वरिष्ठ कवि मोहन आलोक करी। सत्र रौ संयोजन शंकरसिंह राजपुरोहित कर्‌यौ। दूजै सत्र में कहाणीकार मीठेश निरमोही अर बुलाकी शर्मा रा पत्रवाचन हुया। इण सत्र री अध्यक्षता रामस्वरूप किसान करी जदकै संयोजन नवनीत पाण्डे कर्‌यौ।

तीजै सत्र मांय कवि-कथाकार मालचन्द तिवाड़ी अर राजेन्द्र जोशी पत्रवाचन कर्‌यौ। इण सत्र री अध्यक्षता मधु आचार्य 'आशावादी' करी। आगन्तुक अतिथियां अर श्रोतावां रै प्रति आभार सुरेश हिन्दुस्तानी प्रगट कर्‌यौ।

राजस्थानी रचना-पाठ रौ आयोजन

इण सूं पैली 26 सितम्बर नै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली अर शब्दश्री साहित्य संस्थान, बीकानेर कानी सूं नारी चेतना विषयक माथै रचना-पाठ रौ आयोजन व्हियौ। अकादमी राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल संयोजक डॉ. अर्जुनदेव चारण दिवलौ जला'र आयोजन री सरुआत कीन्ही। साहित्य अकादेमी के पदाधिकारी शान्तनू गंगोपाध्याय स्वागत भासण दियौ। युवा कवयित्री मोनिका गौड़ 'सत्ता री मळाई चाटै, धरम जात री लाय बांटे, पैर'र धोळ-धोळपोसिया, देस नै लजावै है' जैड़ी तल्ख तेवर आळी कविता सुणाई। जोधपुर री कवयित्री डॉ. सुमन बिस्सा 'खेत-खेत में कणक काकड़ी, मीठा गटक मतीरा है' गीत सूं श्रोतावां री वाहवाही लूटी। समाज, संस्कृति, नारी विमर्श सूं जुड़ियोड़ा विसयां माथै बिस्सा कविता सुणाई। साहित्य अकादमी सूं पुरस्कृत कवयित्री संतोष माया मोहन री बिरछ, सूंपे पात, नव पल्लव पांगरौ, देर आद गैरै आधुनिक भावबोध री कवितावां सुणाई। युवा पुरस्कार सूं सम्मानित ऋतुप्रिया नारी अस्मिता, सामाजिक स्वरूप अर जथारथ सूं जुड़ियोड़ी कवितावां रौ पाठ कर्‌यौ। इण मौकै वरिष्ठ कवि मोहन आलोक, भवानीशंकर व्यास 'विनोद', डॉ. भरत ओळा, रामेसर गोदारा, मीठेश निर्मोही, दीनदयाल शर्मा, डॉ. नीरज दइया, कमल रंगा, मधु आचार्य, बुलाकी शर्मा, राजेन्द्र जोशी, डॉ. मेघना शर्मा, ऊषा किरण सोनी, शशिप्रभा, सुहानी शर्मा, आनन्द कौर व्यास, रवि पुरोहित आद उपस्थित हा।